मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है?

श्याम मोहन अस्थाना

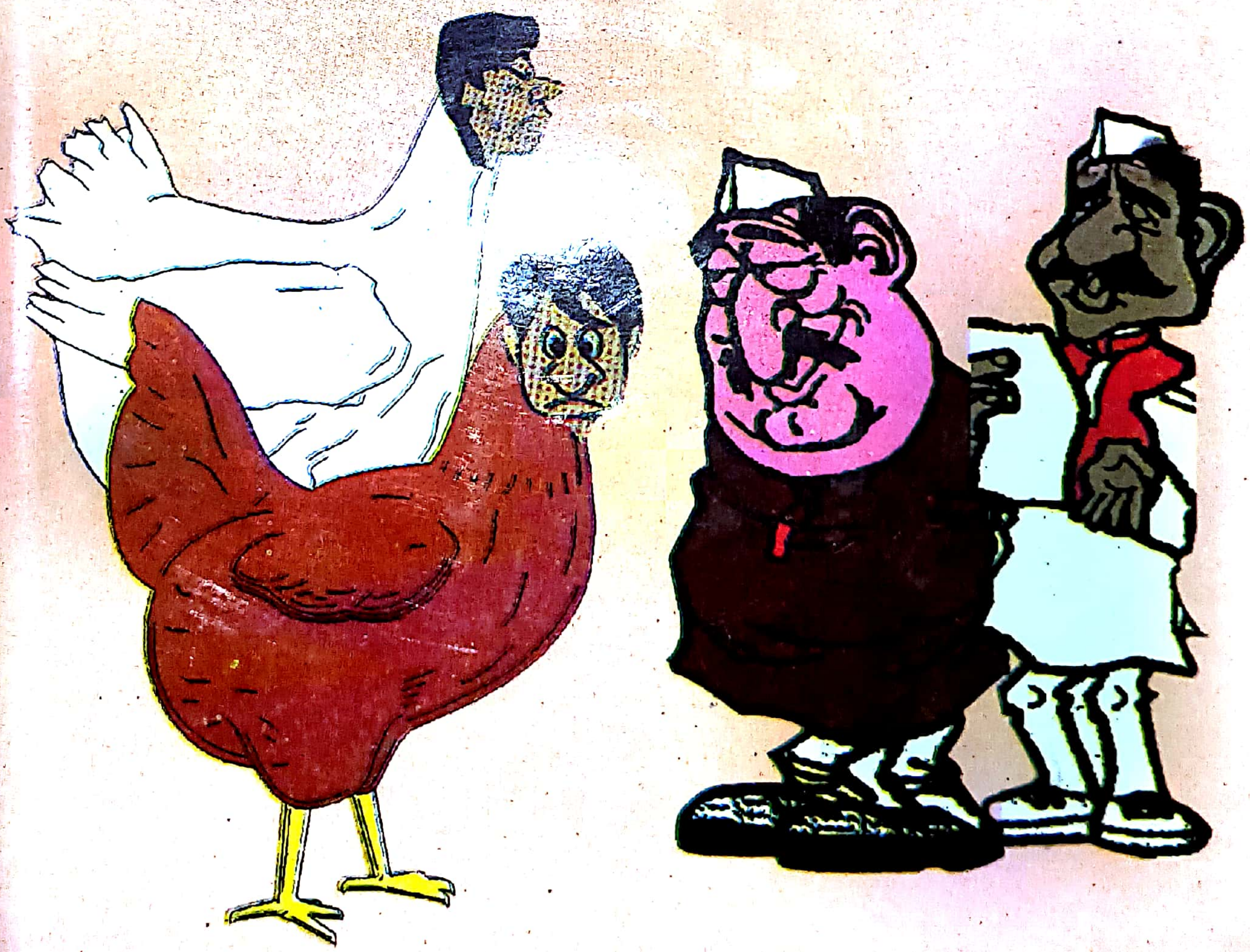

मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है ?
श्याम मोहन अस्थाना

मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है?

मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है?

श्याम मोहन अस्थाना

अभिव्यक्ति प्रकाशन
दिल्ली-110032

© श्याम मोहन अस्थाना

मूल्य : 95 रुपये

प्रथम संस्करण : 2002

प्रकाशक : अभिव्यक्ति प्रकाशन
29/61, गली नं. 11,
विश्वास नगर, दिल्ली-110032

शब्द-संयोजक : प्रतिभा प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-32

MURGIYON KO KYON GUSSA AATA HAI *(Play)*
by Shyam Mohan Asthana
Rs. 95.00

अनुक्रम

हाथी राजा—हाथी रानी	7
मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है?	35
बुधुआ की शादी	57
बरगद का शाप	65

हाथी राजा—हाथी रानी

(पटना दूरदर्शन से प्रसारित)

पात्र

हाथी राजा
हाथी रानी
हाथी-1, हाथी-2, हाथी-3, हाथी-4
लकड़हारे—1, 2, 3, 4,
बहू सुधा, ननद मधु, पति मयंक और सुधा की सास
ननकू-झिनकू
नेताजी खदेरन सिंह, झंडाराम-डंडाराम एवं करोड़ीमल
पाँच बच्चे-बच्चियाँ—वसु, निशांत, धवल, कुशल और हर्षिता
सरकस मालिक—रिंग मास्टर-1, रिंग मास्टर-2

1

[स्थान : जंगल का एक भाग। हाथियों का एक जुलूस दर्शकों की ओर से गुजरता मंच की ओर बढ़ता है। सबसे आगे हैं हाथी राजा, पीछे हैं हाथी रानी। उनके पीछे हैं— हाथी-1, हाथी-2, हाथी-3, हाथी-4]

हाथी-1 : हाथी राजा।

सभी साथी : जिन्दाबाद!

हाथी-2 : हाथी रानी।

सभी साथी : जिन्दाबाद!

[मंच पर पहुँचकर हाथी राजा और हाथी रानी सिंहासन पर बैठते हैं।]

हाथी-3 : हाथी राजा।

सभी हाथी : जिन्दाबाद!

हाथी-4 : हाथी रानी।

सभी हाथी : जिन्दाबाद!

हाथी राजा : हाथी बंधुओ, आज हमारे शासन की वर्षगाँठ है। हम अपने शासन का वार्षिक विवरण सुनना चाहते हैं।

हाथी रानी : हाथी संसद के सदस्यो, मैं हाथी राजा के सांस्कृतिक जीवन का विकास समाचार जानने को उत्सुक हूँ।

हाथी-1 : हाथी राजा, आपका शासन शांति और व्यवस्था का स्वर्णयुग कहा जाता है। हमें प्रकृति का पूरा सहयोग मिला है। गर्मी, सर्दी, वर्षा—सभी ऋतुएँ हमारे लिए शुभ संवाद लाती हैं। हमारे वृक्ष फलों से भरपूर हैं।

सभी हाथी : हाथी राजा की जय! हाथी रानी की जय!

हाथी-2 : हाथी राजा, आपके शासन में सभी पशु-पक्षी बहुत प्रेम से जीवन-यापन करते हैं। लोगों का कहना है कि आपके शासन में शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते हैं।

सभी हाथी : हाथी राजा की जय! हाथी रानी की जय!

हाथी-3 : हाथी राजा, आपके शासन में जंगल का अभूतपूर्व विकास हुआ है। हमारे लिए जंगल एक घर, एक फुलवारी है। हमने पेड़ों से मित्रता की है। वे हमें फलों का उपहार देते हैं।

सभी हाथी : हाथी राजा की जय! हाथी रानी की जय!

हाथी-4 : हाथी रानी, हमारे राज्य में सभी पशु-पक्षी साक्षर हो चुके हैं। हमारा आर्थिक विकास संतोषजनक है। हमारे राज्य में जनसंख्या की कोई समस्या नहीं है।

हाथी रानी, हमारे पशु-पक्षियों को सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में शिखर पुरस्कार मिले हैं।

सभी हाथी : हाथी राजा की जय! हाथी रानी की जय!

हाथी राजा : भाइयो, आपकी रिपोर्ट सभी दृष्टि से उत्साहवर्धक है। कुछ नये सुझाव आये हैं—कुछ पशुओं का सुझाव है कि हमें मनुष्यों की तरह खेती करनी चाहिए। कुछ पक्षियों का कहना है कि हमें पड़ोस के राज्यों से सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। हमें आपकी राय चाहिए।

हाथी-1 : हाथी राजा इन विषयों पर आप ही निर्णय लें। हम आपके आदेशों का पालन करेंगे।

हाथी रानी : हाथी राजा, हमें इन विषयों पर जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। मनुष्य, मनुष्य है, हाथी, हाथी—दोनों की दुनिया, अलग-अलग रहनी चाहिए।

[पेड़ों के कटने की आवाज।]

हाथी राजा : यह कैसी आवाज है। लगता है कि कोई कुल्हाड़ी चला रहा है।

हाथी-2 : महाराज, आपका अनुमान ठीक है। दो पैरों का जानवर, आदमी जंगल में आया हुआ है।

हाथी-3 : महाराज, उनके पास पेड़ काटने की मशीनें और दूसरे औजार हैं।

हाथी-4 : वे एक गिरोह में आये हैं। उनकी नीयत ठीक नहीं लगती।

हाथी राजा : लेकिन मनुष्य जंगल क्यों काट रहा है ?

हाथी-1 : हम इसका सही जवाब नहीं जानते। शायद वह जंगल को प्रकृति का उपहार नहीं, आय का साधन मानता है।

हाथी-2 : लोगों का कहना है कि वह यहाँ नई कालोनी बनाना चाहता है। यहाँ मंत्री लोग रहेंगे।

हाथी राजा : यह सब बहुत खतरनाक है। अगर जंगल ही नहीं रहेगा तो पशु-पक्षियों का क्या होगा ?

हाथी रानी : मनुष्य हमारे अधिकारों पर प्रहार कर रहा है। उसे रोकना होगा।

[पत्थर तोड़ने की आवाज।]

हाथी राजा : यह कैसी आवाज है ? लगता है कि बहुत से लोग पत्थर तोड़ रहे हैं।

हाथी-3 : हाथी राजा, मनुष्य पत्थर तोड़ने की मशीन लाया है। वह पहाड़ तोड़ कर सड़क बना रहा है।

हाथी राजा : लेकिन वह ऐसा क्यों कर रहा है ?

हाथी-4 : लोगों का कहना है कि पहाड़ के ऊपर होटल बनेगा।

हाथी राजा : यह होटल क्या होता है ?

हाथी-1 : हाथी राजा, हम लोगों में से किसी ने होटल नहीं देखा है।

हाथी रानी : सुना है कि लोग होटल में मौज-मस्ती के लिए जाते हैं। खूब शराब पीते हैं। रात-भर शोर मचाते हैं।

हाथी राजा : आदमी का उत्पात बढ़ता जा रहा है। हमें तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

हाथी-2 : हाँ महाराज, अगर हमने मनुष्य का तुरंत विरोध नहीं किया तो स्थिति हाथ से बाहर हो जाएगी।

हाथी-3 : हाथी राजा, हमें आदमी के खिलाफ युद्ध की घोषणा करनी चाहिए।

हाथी-4 : हाथी राजा, हमें आदमी को कुचल देना चाहिए।

हाथी राजा : ठीक है, हाथी सेना को तुरंत तैयार करो। हाथी वीरो आगे बढ़ो। घमंडी मनुष्य जाति को हमेशा के लिए नष्ट कर दो।

[बिगुल की आवाज।]

सभी हाथी : हाथी राजा जिन्दाबाद! हाथी रानी, जिन्दाबाद!

हाथी-1 : हाथी राजा, हम इस युद्ध के लिए तैयार हैं। हम अपने पैरों के नीचे दुश्मन को कुचल देंगे। उनकी घृणित योजनाएँ हमेशा के लिए समाप्त हो जायेंगी।

हाथी रानी : ठहरो! हाथी राजा, हमारी सेना अजेय है। पर युद्ध के पहले हमें मनुष्य की शक्ति और नीयत का पता लगाना चाहिए।

हाथी राजा : पर इसके लिए अब समय नहीं है। मनुष्य जंगलों को नष्ट कर रहा है। वह पशु जाति पर घोर अत्याचार कर रहा है। यह युद्ध हम अपनी रक्षा के लिए लड़ रहे हैं।

हाथी रानी : हाथी राजा, आपने जो कुछ कहा है, सच है। पर हमारे पास मनुष्य की शक्ति, और उसके हथियारों की सूचना नहीं है। मनुष्य की राजनीति के बारे में भी जानकारी चाहिए। हमें अपने गुप्तचरों को भेजना चाहिए।

हाथी राजा : ठीक है। तब यही तय रहा। हम अपने गुप्तचरों को चारों दिशाओं में भेजेंगे। हाथी-1 पूरब जायगा। हाथी-2 पश्चिम की यात्रा करेगा। हाथी-3 और 4 उत्तर और दक्षिण जायेंगे। हम सभी की रिपोर्ट मिलने के बाद अपना कार्यक्रम तय करेंगे।

हाथी रानी : हाथी युवको, तुम पर गहरी जिम्मेवारी है। तुम मनुष्य की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों पर रिपोर्ट तैयार करोगे। तुम मनुष्य के सामाजिक एवं राजनीतिक आचरण का भी अध्ययन करोगे। चूँकि यह काम बहुत महत्त्वपूर्ण है इसका निरीक्षण खुद मैं करूँगी। मैं किसी समय, किसी जगह जा सकती हूँ। सबको एक महीने के अंदर अपनी रिपोर्ट देनी होगी।

सभी हाथी : हाथी राजा की जय! हाथी रानी की जय!

[प्रकाश बुझता है।]

2

[स्थान : जंगल का दूसरा भाग। समय : दिन का पहला प्रहर। चार लकड़हारे पेड़ों को कुल्हाड़े से काट रहे हैं।]

लकड़हारा-1 : (गीत)

पैसा राजा, पैसा रानी,
पैसा है घर-घर की कहानी

कहे सयाने, सुन रे भइया,
हो हइया, हो-हो हइया।

[इस सामूहिक स्वर पर सभी लकड़हारे कुल्हाड़ा चलाते हैं।]

लकड़हारा-2 : मंगलू जी ने सत्तू साना,
मंगली बाई ने भूना दाना,

सब कुछ खा गयी काली गइया,
हो हइया, हो-हो हइया।

लकड़हारा-3 : दुखिया-सुखिया सखी सहेली,
दुखिया दुख की पक्की चेली,
सुखिया सुख में ताता-थैया
हो हइया, हो-हो हइया।

लकड़हारा-4 : मेघनाथ ने मारा बान
लक्ष्मन मूर्छित राम हैरान,
लाओ संजीवन, बचे रे भइया,
हो हइया, हो-हो हइया।

[हाथी-1 का प्रवेश।]

हाथी-1 : क्यों भइया, तुम लोग यह क्या कर रहे हो?

लकड़हारा-1 : क्यों रे हाथी के पुत्तर, तुझे दिखाई नहीं देता। हमं पेड़ काट रहे हैं। हमें पूरा जंगल काटना है।

हाथी-1 : तुम पूरा जंगल काटोगे? लेकिन क्यों?

लकड़हारा-2 : हम ठेकेदार धुरंधर सिंह के मजदूर हैं। धुरंधर सिंह ने पूरे जंगल का ठेका लिया है।

हाथी-1 : लेकिन ठेकेदार साहब जंगल क्यों कटवाना चाहते हैं?

लकड़हारा-3 : यहाँ मंत्रियों की कालोनी बनेगी। पहाड़ पर होटल बनेगा। वहाँ मंत्री आराम करेंगे।

हाथी-1 : मंत्रियों को इतने आराम की क्या जरूरत है? हमने तो उन्हें सिर्फ भाषण देते और माला पहनते देखा है।

लकड़हारा-4 : चुप रह। तू तो बड़ी खतरनाक बातें कर रहा है। तू कोई पत्रकार तो नहीं है।

हाथी-1 : नहीं, मैं पत्रकार नहीं हूँ। हम जंगल के रहने वाले हैं। हमारा सारा दुख-सुख जंगल से जुड़ा हुआ है।

लकड़हारा-3 : तू बहुत बढ़-चढ़ कर बातें कर रहा है। क्या जंगल तेरे बाप की जायदाद है?

हाथी-1 : यह सच है। हम प्रकृति के पुत्र हैं। जंगल हमारी जन्मभूमि और कर्मभूमि है। इस पर हमारा पहला अधिकार है।

लकड़हारा-2 : यह सब गलत है। सभी जंगल सरकार की संपत्ति है। उसी सरकार ने धुरंधर सिंह को जंगल काटने का परमिट दिया है।

हाथी-1 : जंगल कट जाने से सभी पशु-पक्षी बेघर हो जायेंगे।

लकड़हारा-3 : इसके लिए हम क्या कर सकते हैं। सामने नदी बह रही है। अगर जंगल कटने का बहुत दुख हो तो नदी में डूब मरो।

हाथी-1 : जंगल काट कर तुम पूरे परिवेश को नष्ट कर रहे हो। यह सबकी सामूहिक आत्महत्या है।

लकड़हारा-4 : दादा, यह हाथी का बेटा हमें चुनौती दे रहा है। इसे एक सीख देनी चाहिए।

लकड़हारा-1 : हाँ-हाँ, उठाओ कुल्हाड़ा, पेड़ पीछे कटेंगे। हम इस हाथी के बेटे को पहले काटेंगे।

हाथी-1 : हैं हैं! तुम सब यह क्या कह रहे हो?

लकड़हारा-2 : तूने हमारा बहुत समय नष्ट किया है। हम तुझे नहीं छोड़ेंगे।

[सभी लकड़हारे कुल्हाड़ा तानकर हाथी-1 के पीछे दौड़ते हैं।]

हाथी-1 : भागता है।

[प्रकाश बुझता है।]

3

[स्थान : एक शिक्षित परिवार का आँगन। समय : शाम का समय। पत्नी सुधा स्वेटर बुन रही है। सास और ननद मधु पत्रिकाएँ देख रही हैं। पति मयंक का प्रवेश।]

मयंक : सुधा, तुमने अपने पिता को जो चिट्ठी लिखी थी, उसका क्या जवाब आया?

सुधा : मैंने पिताजी को चिट्ठी नहीं लिखी। लिखने से कोई फायदा नहीं है।

मंयक : क्या मतलब!

सुधा : पिताजी के पास पैसा नहीं है। उन्होंने शादी के लिए पी. एफ. से लोन लिया था। उस कर्ज में ही आधी तनख्वाह कट जाती है।

मयंक : क्यूँ री चुड़ैल, शादी के समय तेरे बाप ने नयी मारुति देने को कहा था। उस वादे का क्या हुआ?

सुधा : बाबू ने मारुति देने की बात कही थी। पर तुमने तिलक के समय दो लाख कैश ले लिया। अब मारुति की चर्चा क्यों करते हो!

मयंक : माँ, तुमने सुना। तुम्हारी बहू हम सभी को झूठा ठहरा रही है।

माँ : इससे तो तुम ही निपटो। मैंने तो दूसरी लड़की देखी थी। पता नहीं यह कंगली कहाँ से आ गई।

सुधा : माँ, क्या खानदान की बात सिर्फ पैसे से तय होती है?

माँ : चुप रह। बगल में संजय की शादी हुई है। लड़का ओवरसियर है। पर दहेज से घर भर गया। यहाँ इंजीनियर बेटा होते हुए हम झख रहे हैं।

मयंक : माँ, यह सोचती है कि दो लाख देकर इसके बाप ने सबको खरीद लिया है।

मधु : माँ, मैंने तो तुम्हें अपनी सहेली चंदा के बारे में कहा था। पता नहीं, तुम यह कार्टून कहाँ से ले आईं।

सुधा : माँ, दूसरों ने क्या ऑफर किया था मुझे मालूम नहीं है। पर पिताजी ने मारुति कार की बात कही थी। आपने उसके एवज में दो लाख ले लिया।

माँ : हरामजादी, हमीं लोगों को झूठा बनाती है। ज्यादा बोलेगी तो तेरा पूरा झोटा पकड़ कर उखाड़ दूँगी।

सुधा : माँ, आपको कम से कम ऐसा नहीं कहना चाहिए। मुझे भी अपनी ही बेटी मान लीजिए।

मधु : चुप रहो। इस पालिटिक्स से कुछ नहीं होगा। हम सब इतने बेवकूफ नहीं हैं।

[हाथी-2 दरवाजे से झाँकता है।]

माँ : ठीक है। हम तुझे एक मौका और देते हैं। अगर महीने के अंत तक तेरे बाप ने दो लाख दे दिया तो हम तुझे माफ कर देंगे।

सुधा : यह असंभव है। बाबू के पास पैसा नहीं है।

माँ : क्यूँ री मधु, तेरी सहेली चंदा की शादी हो गई?

मधु : नहीं माँ, चंदा के पिता इंजीनियर दामाद चाहते हैं। उनका दस लाख का बजट है।

माँ : तब ठीक है। उनसे कहो कि थोड़ा इंतजार करें। लेकिन इस पगली को पहले पागलखाने भेजना होगा।

सुधा : माँ, यह आप क्या कह रही हैं! क्या मैं पागल हूँ?

मयंक : माँ, उसमें बहुत झंझट है। जो कुछ करना हो, एक बार में करना होगा।

[मयंक माँ और मधु के साथ सलाह करता है।]

मयंक : माँ, घबराने क़ी बात नहीं है। मैं बाजार से टूटा हुआ स्टोव खरीद कर लाया हूँ।

सुधा : यह सब क्या हो रहा है! क्या आप लोग मेरी हत्या करेंगे?

मयंक : यह हत्या नहीं होगी। एक स्टोव फटेगा। इसे हत्या नहीं, दुर्घटना कहा जायेगा।

[हाथी-2 का प्रवेश।]

हाथी-2 : ठहरिये।

मयंक : कौन हो तुम! भीतर कैसे चले आये?

हाथी-2 : मैं हाथी परिवार का सदस्य हूँ। पानी की तलाश में आया था। मैंने जो कुछ सुना है, बहुत ही अनुचित है।

मयंक : तुम्हें इन बातों से क्या मतलब है! तुम जा सकते हो।

हाथी-2 : आप दो लाख के लिए इस लड़की की हत्या करना चाहते हैं। आप मुझे बाजार में बेच दीजिए। आपको दो लाख मिल जायेगा।

मयंक : हमें बेवकूफ बनाता है। आजकल हाथी कौन खरीदता है।

हाथी-2 : यह लड़की बेहद मासूम है। इसके माँ-बाप के पास पैसा नहीं है। इसमें इसका क्या कसूर है!

मयंक : तुम्हें इन बातों से क्या मतलब है! यहाँ नेतागिरी करने आये हो?

हाथी-2 : तुम लोगों की नीयत ठीक नहीं है।

मयंक : ठीक है। लड़की से पीछे निपटेंगे। तुझे पहले फूकेंगे।

[माँ और मधु नेपथ्य से दो टीन पेट्रोल लाती हैं।]

हाथी-2 : बाप रे बाप, ये तो मेरी हत्या को तैयार हैं। भागना ही पड़ेगा।

[हाथी-2 भागता है। मयंक माँ और मधु से सलाह करता है।]

सुधा : **(दर्शकों से)** सुनो, समाज और धर्म के ठेकेदारो। आज दहेज की वेदी पर सुधा जल रही है। एक दिन तुम्हारी बहन या बेटी को भी इसी आग में जलना पड़ सकता है।

मयंक : हरामजादी, गाली दे रही है। इसका मुँह हमेशा के लिए बंद

करना होगा।

[माँ और मधु सुधा के ऊपर पेट्रोल छिड़कती हैं।]

सुधा : बचाओ! बचाओ!

मयंक : तुझे अब कोई नहीं बचा सकता।

[मयंक सुधा के ऊपर जलती हुई तीली फेंकता है। चारों तरफ आग जल उठती है। बचाओ! बचाओ! कहती हुई दौड़ती है। अंत में सुधा छटपटाती हुई दम तोड़ देती है।]

[प्रकाश बुझता है।]

4

[स्थान : शहर की एक कालोनी। समय : सुबह नौ बजे। ननकू का प्रवेश।]

ननकू : क्यों बे झिनकुआ, साला कहाँ छिपकर बैठा है?

[झिनकू का प्रवेश।]

झिनकू : झिनकू मैं क्यों छिपूँगा! छिपते हैं मेरे दुश्मन! बोल साले क्या कहता है?

ननकू : कल रात कलकत्ते से आया। पर देखता हूँ कि साले तूने मकान के सामने कुतुबमीनार खड़ा कर दिया।

झिनकू : यह कुतुबमीनार नहीं है। साले, यह ताजमहल है। थोड़ा काम बाकी है। देखकर तेरी छाती फट जायेगी।

ननकू : तू क्या खाकर मेरा मुकाबला करेगा! अच्छा देख, इसकी नाली सड़क के पूरब जायेगी।

झिनकू : पूरब क्यों! पूरी कालोनी का पानी सड़क के पच्छिम बहता है। इस कोठी का पानी भी पच्छिम बहेगा।

ननकू : नहीं, ऐसा नहीं होगा। मैं कालोनी की नाली को भी हटा रहा हूँ।

झिनकू : तेरे हटाने से हटेगा। बेटा, अपने को समझता क्या है!

ननकू : कालोनी के नक्शे में नाली सड़क के पूरब में है। मैंने नक्शे को देखा है।

झिनकू : यह सरासर झूठ है। मैंने ऐसा कभी नहीं सुना।

ननकू : इससे क्या फरक पड़ता है।

झिनकू : पर कालोनी का वह नक्शा कहाँ है?

ननकू : वर्मा साहब के पास है। वे ही जमीन के मालिक थे।

झिनकू : वर्मा साहब को मरे 50-60 साल हो गए। उनके खानदान में अब कोई नहीं बचा है।

ननकू : तू तो बेकार हुज्जत करता है। मैंने जो कह दिया, वही सच है।

झिनकू : क्यों बे, तू क्या कालोनी का दादा है?

ननकू : क्या तू इस बात को नहीं जानता। और सुन, मैं थाना-पुलिस नहीं जाता।

झिनकू : थाना-पुलिस कौन जाता है। नाली पूरब बहेगी या पच्छिम, इसका फैसला यहीं होगा।

[दोनों अपने-अपने घरों से लाठियाँ लेकर आते हैं।]

ननकू : आ जा साले।

झिनकू : बेटे, आज तेरी मौत लिखी है।

[हाथी-3 का प्रवेश।]

हाथी-3 : अरे-अरे तुम लोग यह क्या कर रहे हो?

ननकू : तू साला कौन है! यहाँ क्या कर रहा है?

हाथी-3 : मैं जंगल का हाथी हूँ। काम से शहर में आया हूँ। तुम लोग इस तरह क्यों लड़ रहे हो?

ननकू : इस साले को पैसे की गरमी चढ़ गई है। इसकी गरमी निकाल रहा हूँ।

हाथी-3 : लेकिन बात क्या है?

ननकू : इस साले को मना किया था पर इसने मेरे मकान के सामने कुतुबमीनार खड़ा कर दिया।

झिनकू : क्यों साले, मैंने अपनी जमीन पर मकान बनवाया। तेरी छाती क्यों फटती है।

हाथी-3 : कुछ और मामला है।

झिनकू : हाँ है। यह साला कहता है कि मकान की नाली पूरब से निकालो। यह झूठा झगड़ा है। पूरे कालोनी की नाली पच्छिम में है।

हाथी-3 : ऐसा करो, न पूरब, न पच्छिम। नाली सड़क के बीच से निकालो।

ननकू : असली बात यह नहीं है। इसको बहुत घमंड हो गया है। साले ने नयी मारुति ली है। इसकी बीवी तो इतना रंग-रोगन करती है जैसे कोठेवाली हो।

झिनकू : साले, तूने फिर मेरी बीवी का नाम लिया। तेरा खून पी जाऊँगा।

[दोनों लाठी चलाते हैं।]

हाथी-3 : अरे रे, तुम लोग क्या कर रहे हो!

ननकू : साला हाथी, यहाँ पंचायत करने आया है। पहले इसे ही मारूंगा।

झिनकू : हाथी मास्टर, भागो! यह कश्मीर प्रॉब्लम है। यह झगड़ा तुमसे नहीं निपटेगा।

हाथी-3 : बाप रे बाप, कहाँ फँस गया।

[हाथी भागता है। दूर खड़ा होता है।]

ननकू : आ जा रे साले, आज फैसला हो जाय।

झिनकू : हाँ, हो जाय। कौन भागता है।

[दोनों लाठी चलाते हैं। दोनों के सिर पर लाठी लगती है। दोनों मर जाते हैं।]

हाथी-3 : लगता है कि दोनों मर गये। आदमी कितना मूर्ख होता है!

[प्रकाश बुझता है।]

5

[स्थान : नेताजी खदेरन सिंह की कोठी। समय : संध्या काल। नेताजी टहल रहे हैं। नेताजी के लठैत झंडा राम और डंडा राम का प्रवेश।]

दोनों : नेताजी खदेरन सिंह की जय।

नेताजी : आओ झंडाराम-डंडाराम! बहुत देर से तुम लोगों का इंतजार कर रहा था।

झंडाराम : क्या करूँ नेताजी! थाने से एक एनक्वायरी आ गई थी।

नेताजी : चलो ठीक है। यह सब तो चलता रहता है।

डंडाराम : कैसे याद किया नेताजी। क्या हुकुम है?

नेताजी : देखो भइया, लोग तुम लोगों को शुम्भ-निशुम्भ कहते हैं। पर तुम लोगों की कीमत मैं जानता हूँ।

झंडाराम : नेताजी, हम लोग भी आपके लिए कितना जोखिम उठाते हैं। तीन मर्डर केस हैं। मारपीट के दर्जनों मामले हैं।

नेताजी : मैं सब जानता हूँ। सब समझता हूँ।

डंडाराम : नेताजी, कोई नया प्रोब्लम है।

नेताजी : हाँ भइया, बहुत बड़ा प्रोब्लम है। अखबार में प्रधानमंत्री का भाषण छपा है। लगता है कि चुनाव बहुत पास है।

झंडाराम : हाँ नेताजी, हमने भी पढ़ा है।

नेताजी : देखो भइया, इस बार जो चुनाव आयुक्त आया है, महान चंडाल है। कहता है कि बोगस वोट या बूथ-लूट नहीं होने देंगे। इडियट!

झंडाराम : हाँ, नेताजी, चुनाव अधिकारी बहुत खतरनाक बातें कर रहा है।

नेताजी : लगता है कि तुम लोगों को इस बार अधिक मेहनत करनी होगी।

डंडाराम : नेताजी, हम लोगों ने इस बार एक अलग कार्यक्रम बनाया है। यह कार्यक्रम फाइनल हो गया है।

नेताजी : वेरी गुड, तुम लोगों ने क्या सोचा है?

झंडाराम : नेताजी, इस बार हम लोगों में से कोई उम्मीदवार होगा।

नेताजी : क्या कह रहे हो! देखो भइया ऐसा मजाक मत करो। तुम लोगों पर मर्डर के मुकदमे हैं। तुम्हें लोग क्रिमिनल कहते हैं।

झंडाराम : नेताजी, जितने भी मर्डर हुए हैं सब आपके आदेश पर किये गये। हमने तो आपके कहने पर विधान सभा के भीतर लाठी चलाई है।

नेताजी : हाँ, तुमने यह सब किया है। पर इसके लिए हमने कई सूटकेस भर के रुपये दिये हैं।

डंडाराम : नेताजी, हमें रुपया नहीं चाहिए। चुनाव रुपया नहीं, बाहुबल से जीता जाता है।

नेताजी : लेकिन तुम लोगों में से कौन चुनाव लड़ेगा?

झंडाराम : इसे हम आपस में तय कर लेंगे। हम लोग आधे-आधे समय विधायक रहेंगे।

[सेठ करोड़ीमल का प्रवेश।]

सेठ : नेताजी, परनाम।

नेताजी : आओ सेठ। चुनाव बहुत पास है। सोचा कि तुमसे सलाह-मश्विरा जरूरी है।

सेठ : हाँ नेताजी, प्रधानमंत्री की स्पीच से ऐसा ही लगता है।

नेताजी : करोड़ीमल, एक मजाक सुनोगे। झंडाराम-डंडाराम का कहना है कि इस बार मैं नहीं वे बारी-बारी चुनाव लड़ेंगे।

सेठ : अरे ये लाठी चलाने वाला क्या चुनाव लड़ेगा! इस बार हम इलेक्शन लड़ेगा।

नेताजी : अरे करोड़ीमल, यह क्या कह रहे हो!

सेठ : नेताजी, पैसा हम खर्च करता है। चुनाव तुम जीतते हो। हमको क्या फायदा होता है!

नेताजी : करोड़ीमल नेतागिरी में बड़ा जोखिम है। फिर तुम्हारे ऊपर करेप्शन के कितने केस हैं!

सेठ : वह सारा करेप्शन तुम्हारे खातिर किया था। नेताजी हमने तुम्हारा लफड़ा सिर पर ओढ़ लिया था।

नेताजी : करोड़ीमल, तुम चुनाव नहीं लड़ोगे।

सेठ : नेताजी, तुमने इस बार कोई पालिटिक्स किया तो अच्छा नहीं होगा। कोर्ट में एक बयान से तुम कटघरे के भीतर होगे।

[हाथी-4 का प्रवेश।]

हाथी-4 : भइया, तुम लोग इस तरह क्यों झगड़ रहे हो!

नेताजी : आओ-आओ हाथी भाई! मुझे याद है। तुम हमारे विजय जुलूस में शामिल हुए थे।

हाथी-4 : मैं विजय जुलूस में नहीं था। पर कहो, तुम्हारी समस्या क्या है?

नेताजी : देखो भइया, ये लोग हमारे सहयोगी रहे हैं। ये हैं हमारे लठैत—झंडाराम और डंडाराम। दूसरे हैं, सेठ करोड़ीमल—हमारे फाइनेन्स मिनिस्टर। ये लोग अब मेरा चुनाव का टिकट छीनना चाहते हैं।

हाथी-4 : एक बुनियादी सवाल है। इस पोस्ट के लिए सबसे योग्य कौन है!

नेताजी : हाथी भैया, तुमने सही सवाल किया है। इस देश की राजनीति तिकड़म से चलती है। और मैं इस राज्य का सबसे बड़ा तिकड़मबाज हूँ।

हाथी-4 : और झंडाराम जी-डंडाराम जी, आप लोगों को क्या कहना है?

झंडाराम : इस देश की राजनीति बाहुबल पर चलती है और हम लोग इस राज्य के टॉप क्रिमिनल हैं।

हाथी-4 : और सेठ जी, आपको इस विषय पर क्या कहना है?

सेठ : देखो भइया, इस देश की राजनीति ब्लैक मनी पर चलती है। मैं सभी राजनीतिक दलों को पैसा देता हूँ। अब समय आ गया है कि खुद चुनाव लड़ूँ।

हाथी-4 : आप सभी लोगों के पास समय की पहचान नहीं है। सच तो यह है कि तिकड़म, लाठी या पैसा अगले चुनाव में निर्णायक नहीं होंगे।

नेताजी : तब चुनाव कौन लड़े?

हाथी-4 : देश में अब भी लाखों लोग हैं जो ईमानदारी में विश्वास रखते

हैं। लाखों लोग हैं जो विचारों की दुनिया में जीते हैं। लाखों लोग हैं जो जनता की सेवा के प्रति समर्पित हैं। उनमें से किसी को ढूँढ़ निकालो और चुनाव में खड़ा करो।

नेताजी : नानसेंस, इस दुष्ट हाथी को यहाँ किसने बुलाया है। यह तो विरोधी दल का एजेंट लगता है।

झंडाराम : साला, हमको लेक्चर देता है।

डंडाराम : मारो साले को! खत्म कर दो।

सेठ : होशियारी से मारना। हम क्रिमिनल केस देख लेगा।

[झंडाराम-डंडाराम लाठी लेकर दौड़ते हैं। हाथी-4 भागता है। कुछ दूर पर खड़ा होता है।]

हाथी-4 : इनका झगड़ा निपटने वाला नहीं है। देखना है कि तिकड़म, लाठी या पैसे के बीच किसकी जीत होती है।

[हाथी-4 का प्रस्थान।]

[प्रकाश बुझता है।]

6

[स्थान : जंगल का एक भाग। समय : सुबह की बेला। बच्चों के एक झुंड का प्रवेश। इसके सदस्यों का नाम है— वसु, निशांत, धवल, कुशल और हर्षिता। बच्चों के पास टिफिन बाक्स और वाटर बॉटल है।]

वसु : बच्चो, हम यहीं रुकेंगे। हम यहीं पिकनिक करेंगे।

निशांत : वेरी गुड। दीदी, यह तो बहुत सुन्दर जगह है। पेड़ों का झुरमुट, नदी का किनारा और छोटा-सा मैदान।

धवल : दीदी, हम यहाँ क्रिकेट भी खेल सकते हैं।

वसु : नो-नो, नो क्रिकेट हीयर। यहाँ के खेल अलग हैं। देखो, हरेक पेड़ पर बंदर बैठे हैं। वे हमें देख रहे हैं।

धवल : ओ माई गौड! इतने बंदर! हम इनसे बात करेंगे।

धवल-कुशल : बन्दर मामा, बन्दर मामा,
हमें दिखाओ अपना ड्रामा।

हर्षिता : आम गिराओ बन्दर मामा।

धवल-कुशल : जय राम, जय-जय राम!

निशांत : दीदी, देखो झाड़ियों में कितने खरगोश हैं। वे सब हमें ध्यान से देख रहे हैं।

धवल-कुशल : पास आओ खरगोश बिरादर!
तुमको दूँगा, ब्रेड और बटर।

निशांत : दीदी, जंगल बहुत अच्छा लगा। यह बहुत दिलचस्प जगह है।

[कोयल की बोली।]

हर्षिता : दीदी, हम कोयल के साथ अंताक्षरी खेलेंगे। कुहू ऽ ऽ ऽ!

[पेड़ काटने की आवाज।]

धवल : दीदी, यह कैसी आवाज है?

कुशल : लगता है कि लोग क्रिकेट खेल रहे हैं।

वसु : नो-नो, लोग पेड़ काट रहे हैं। सुनती हूँ कि पूरा जंगल कटेगा।

धवल : पूरा जंगल कटेगा। माई गौड! यह तो बहुत बुरी बात है।

कुशल : दीदी, हम लोग जंगल कटने से नहीं रोक सकते।

वसु : नहीं, यह बच्चों की दुनिया नहीं है। इस दुनिया पर टोपी वालों का शासन है। सुना नहीं है—धोती वाला कमायेगा, टोपी वाला खायेगा।

हर्षिता : दीदी, हमने बालू का घर बनाया है, देखो!

वसु : वेरी गुड। काफी बड़ा घर है। हम लोगों के लिए काफी है।

हर्षिता : दीदी, तुमने कहा था कि यहाँ हाथी रानी आयेगी।

वसु : हाँ-हाँ, जरूर आयेगी। हाथी रानी बच्चों को बहुत प्यार करती है।

धवल : दीदी, वह देखो, हाथी रानी आ रही है।

[हाथी रानी का प्रवेश।]

हर्षिता : हाथी रानी आ गई! हाथी रानी आ गई!

हाथी रानी : बच्चो, राम-राम।

धवल-कुशल : हाथी रानी वेलकम!

(गीत)

हाथी रानी आई है।

जंगल की कहानी लाई है।

धवल : हाथी रानी, फूलों की महक।

कुशल : हाथी रानी, चिड़ियों की चहक।

सब : वह काले-काले बादल-सी,

सावन की जवानी लाई है।

हाथी रानी आई है।

जंगल की कहानी लाई है।

हाथी रानी : बच्चो, यह कहानी जल्दी ही खत्म होने वाली है। जंगल तेजी से कट रहा है। कुछ महीनों के बाद सब कुछ खत्म हो जायगा।

वसु : हाथी रानी, सुनकर बहुत दुख हो रहा है।

हाथी रानी : बच्चो, मैं तुम्हारे लिए कुछ फल लाई हूँ।

वसु : थैंक यू हाथी रानी! हम उस फल को अपने साथ ले जायेंगे।

[वंशी की आवाज।]

हाथी रानी : यह बाँसुरी कौन बजा रहा है?

वसु : पं. हरि राम चौरसिया हैं। देश के महान बाँसुरी वादक हैं। हर साल वैसाख की पूर्णिमा को यहाँ आते हैं।

हाथी रानी : कितनी सुन्दर आवाज है।

वसु : इनकी बाँसुरी में अनेक चमत्कार हैं। पेड़ों में फूल आ जाते हैं। आकाश से वर्षा होने लगती है।

हाथी रानी : ठीक कहती हो। इनके स्वरों में जादू है।

[वंशी की आवाज।]

वसु : इन्होंने हमारे स्कूल में यही राग हंसध्वनि को बजाया था। इस धुन पर हजारों बच्चों ने डांस किया था।

हाथी रानी : हम भी आज इसी धुन पर डांस करेंगे।

वसु : जाओ-जाओ, नहीं माने कन्हैया,

राह चलत पकड़े मोरी बहियाँ।
लपक-झपक बिच चुनरी मसक गई,
जाय कहूँ मैं जसुदा मइया।

[हाथी रानी को बीच में रखकर सभी बच्चे घेरे में घूमते हैं।]

[प्रकाश बुझता है।]

7

[स्थान : हाथी राजा की दरबार। समय : सुबह। सिंहासन पर हाथी राजा और हाथी रानी बैठे हैं। दरबार में उपस्थित हैं—हाथी-1, हाथी-2, हाथी-3 और हाथी-4।]

हाथी राजा : हाथी भाइयो, हमारा हाथी समाज इतिहास के सबसे बड़े संकट से गुजर रहा है। मनुष्य ने हमारे घर पर हमला किया है। हमें मनुष्य को मुँहतोड़ जवाब देना है। हमने मनुष्य के बारे में पता लगाने के लिए चार गुप्तचर भेजे थे। हमें उनकी रिपोर्ट का इंतजार है। उसके बाद हमारा कार्यक्रम तय होगा।

हाथी-1 : हाथी राजा, मैंने मनुष्यों को जंगल काटते देखा। वे बीच-बीच में शराब पी रहे थे। मैंने उन्हें मना किया। उन्होंने मेरी कोई बात नहीं मानी। वे मेरी हत्या करने को तैयार थे। हाथी राजा, मनुष्य बहुत बुद्धिहीन प्राणी है। उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है।

हाथी-2 : हाथी राजा, मनुष्य अत्यन्त क्रूर और हृदयहीन जानवर है। मैं एक घर के भीतर गया था। वहाँ एक पति अपनी पत्नी से दो लाख अतिरिक्त दहेज की माँग कर रहा था। पत्नी के पिता के पास देने को पैसा नहीं था। इस पर वे लोग पत्नी को जिन्दा जलाने को तैयार थे।

मैंने उन्हें रोका। मैंने अपने को बेचकर दो लाख देने की बात कही। पर वे तैयार नहीं हुए। अंत में उन्होंने बेचारी बहू को जला दिया।

हाथी राजा, मनुष्य पूरी सृष्टि के लिए खतरा है। उसे पूरी तरह से नष्ट कर देना चाहिए।

हाथी-3 : हाथी राजा , मनुष्य बहुत ईर्ष्यालु और झगड़ालू प्राणी है। वह छोटी से छोटी बात पर एक-दूसरे की जान ले सकता है।

हाथी राजा, कालोनी की नाली पूरब बहे या पच्छिम—इस पर दो पड़ोसियों ने जान दे दी। मैंने उन्हें बहुत समझाया पर कोई नतीजा नहीं निकला।

हाथी राजा, मनुष्य न अपना भला कर सकता है न दूसरों का। इसे जीने का कोई हक नहीं है।

हाथी-4 : हाथी राजा मनुष्य एक अत्यन्त संकीर्ण विचारों का जानवर है। वह सत्ता के पीछे पागल रहता है।

मैंने आदमी के तीन मॉडल देखे। बूढ़ा नेता जो अपने को सबसे बड़ा तिकड़मबाज कहता है। दो लठैत जो अपने को राज्य के टाप क्रिमिनल कहते हैं। और सेठ जी खुल कर कहता है कि मैं काले धन का राजा हूँ। हाथी राजा, इस समुदाय को नष्ट कर देना ही ठीक होगा।

हाथी राजा : मैंने आप सभी की रिपोर्ट सुनी। अब मैं आप सभी का सुझाव सुनना चाहता हूँ।

हाथी-1 : मनुष्य जाति को खत्म कर देना चाहिए।

हाथी-2 : मनुष्य को जीने का कोई हक नहीं है।

हाथी-3 : मनुष्य सृष्टि का कोढ़ है, इसे जड़ से समाप्त कर देना चाहिए।

हाथी-4 : मनुष्य सब कुछ नष्ट कर रहा है। इस जाति को जल्दी से जल्दी समाप्त कर देना चाहिए। हाथी राजा—ठीक है। हाथी सेना को तैयार करो। मैं स्वयं सेना का नेतृत्व करूँगा। हमारी सेना मानव-जाति को हमेशा के लिए खत्म कर देगी।

हाथी-1 : हाथी राजा,

सभी हाथी : जिन्दाबाद!

हाथी-2 : हाथी रानी,

सभी हाथी : जिन्दाबाद!

हाथी रानी : ठहरो।

हाथी राजा : हाथी रानी, तुम्हें कुछ कहना है। क्या तुम हमारे निर्णय से असहमत हो।

हाथी रानी : नहीं, हमारे गुप्तचरों ने जो कुछ देखा-सुना है, पूरी तरह सच है।

हाथी राजा : तब तुम्हें क्या कहना है?

हाथी रानी : हाथी राजा, मनुष्य एक बुद्धिहीन प्राणी है। वह क्रूर और अमानवीय है। वह बिना वजह झगड़ता है। सत्ता के लिए कोई भी कुकर्म कर सकता है। यह सब सच है। पर मनुष्य के पास एक ऐसी कला है जो हमारे पास नहीं है।

हाथी राजा : मनुष्य के पास ऐसी कौनी-सी कला है?

हाथी रानी : मनुष्य के पास ऐसा संगीत है जिसकी तुलना किसी चीज से नहीं की जा सकती।

हाथी राजा : हमारे पास अपना संगीत है। हमारी आवाज की तुलना बादल की गरज से की जा सकती है।

हाथी रानी : नहीं, मनुष्य का संगीत हमारे संगीत से बेहतर है।

हाथी राजा : क्या मनुष्य का संगीत कोयल की कुहक से भी मीठा है?

हाथी रानी : हाँ, मनुष्य का संगीत कोयल की कुहक से भी मधुर है।

हाथी राजा : क्या मनुष्य का संगीत झरने की कल-कल से भी अच्छा है?

हाथी रानी : हाँ, मनुष्य के संगीत के सामने झरने की कलकल कुछ नहीं है।

हाथी राजा : क्या तुमने स्वयं मनुष्य के संगीत को सुना है?

हाथी रानी : हाँ, मैंने उस संगीत का आनन्द उठाया है। मनुष्य एक छोटे बाँस के टुकड़े से स्वर्गीय संगीत की रचना कर सकता है। उसकी एक धुन पर जंगल की सभी कलियाँ खिल जाती हैं। धुन बदलते ही आकाश में बादल मँडराने लगते हैं। फिर वर्षा

की बूँदें पड़ने लगती हैं।

हाथी राजा : चलो मैंने संगीत की बात मान ली। पर तुम कहना क्या चाहती हो ?

हाथी रानी : अगर हमने मनुष्य जाति को तुरन्त नष्ट कर दिया तो सृष्टि का सबसे सुन्दर संगीत मर जाएगा।

हाथी राजा : पर मनुष्य अत्यन्त क्रूर प्राणी है। उसके अत्याचारों की कोई सीमा नहीं है।

हाथी रानी : मैं मनुष्य को नहीं, उसके संगीत को बचाना चाहती हूँ। मैं हाथी—मनुष्य युद्ध को सिर्फ छह महीने के लिए स्थगित करना चाहती हूँ। छह महीने में सभी बाँसुरी बजाना सीख लेंगे। उसके बाद हम मनुष्य जाति को दंडित कर सकते हैं।

हाथी राजा : ठीक है, यही तय रहा। हाथी समाज को आदेश दिया जाता है कि वह छह महीने में बाँसुरी बजाना सीख लें। छह महीने के बाद हाथी और मनुष्य के बीच निर्णायक युद्ध होगा।

सभी हाथी : हाथी राजा की जय! हाथी रानी की जय!

[प्रकाश बुझता है।]

8

[स्थान : हिमालय सरकस कम्पनी। समय : संध्या 5 बजे। मंच पर बैनर—हिमालय सरकस कम्पनी पुरुष एवं महिला कलाकारों का महान प्रदर्शन। विशिष्ट प्रदर्शन—हाथियों का नृत्य। मंच पर वसु, निशांत और धवल का प्रवेश।]

वसु : लगता है कि हम समय से पहले आ गए हैं।

निशांत : पर दीदी, दर्शकों की गैलरी तो भर गई है। लोग तालियाँ बजा रहे हैं।

धवल : भई, मैं तो हाथियों का नृत्य देखने आया हूँ।

वसु : कुशल और हर्षिता कहाँ गए ?

धवल : लगता है कि वे सरकस के जानवरों को देखने चले गए।

[कुशल और हर्षिता का प्रवेश।]

कुशल : दीदी, हम लोग सरकस के सभी जानवरों को देख आये। हाथी राजा और हाथी रानी को खूब सजाया गया है।

हर्षिता : दीदी, हाथी रानी ने हम लोगों को देखा पर कुछ बोली नहीं। दीदी, हाथी रानी रो रही थी।

निशांत : दीदी, हाथी राजा और हाथी रानी ने सरकस कंपनी क्यों ज्वायन किया ?

वसु : यह एक दुखद कहानी है। हाथी राजा मनुष्य जाति को सीख देना चाहता था। पर हाथी रानी के कहने पर हाथी सेना को छह महीने के लिए रोक दिया गया।

हाथी रानी चाहती थी कि हाथी समुदाय बाँसुरी बजाना सीख ले। चौरसिया जी ने उनसे बाँसुरी के लिए बाँस लाने को कहा था। वे पूरा-पूरा ब़ाँस जड़ से उखाड़ लाये।

मनुष्य को मौका मिल गया। उसने पूरा जंगल काट दिया। उसने सभी जानवरों की हत्या कर दी।

उसने हाथियों पर भी भयानक अत्याचार किया। उसने कुछ हाथियों को चिड़ियाघरों में भेज दिया। बचे हुए हाथी सरकस कंपनियों को बेच दिए गए।

निशांत : दीदी, बड़ी करुण कहानी है। आँखों में आँसू आ गए। लगता है कि मैं हाथियों का नृत्य नहीं देख सकूँगी।

[सरकस के मैनेजर का प्रवेश।]

मैनेजर : भाइयो और बहनो, मैं हिमालय सरकस की ओर से सभी दर्शकों का स्वागत करता हूँ। हमारा पहला कार्यक्रम है—हाथियों का नृत्य।

[दो रिंगमास्टर के बीच हाथी राजा और हाथी रानी का प्रवेश।]

रिंगमास्टर-1 : डमडम डमडम बजता बाजा,
नाचो-नाचो हाथी राजा।

रिंगमास्टर-2 : रिमझिम-रिमझिम बरसे पानी,
नाचो-नाचो हाथी रानी।

[हाथी राजा और हाथी रानी आदेश की उपेक्षा करते हैं सरकस का मैनेजर नाराज होता है।]

मैनेजर : हाथी राजा नाचो।
हाथी रानी नाचो।

[हाथी राजा और हाथी रानी टस से मस नहीं होते।]

रिंगमास्टर-1 : डमडम डमडम बजता बाजा।
नाचो-नाचो हाथी राजा।

रिंगमास्टर-2 : रिमझिम रिमझिम बरसे पानी,
नाचो-नाचो हाथी रानी।

[हाथी राजा और हाथी रानी मौन खड़े रहते हैं। दोनों रिंग-मास्टर हाथी राजा और हाथी रानी को हंटर से मारते हैं।]

हाथी राजा : तुम कितना ही मारो, हमारी जान ही ले लो। हम तुम्हारे कहने पर डांस नहीं करेंगे। तुमने पूरे जंगल को काट दिया है। तुमने जानवरों की हत्या की है। तुम अत्याचारी हो। घोर बर्बर हो।

हाथी रानी : तुमने हाथियों के साथ क्रूरतम व्यवहार किया है। हम तुम्हारे किसी आदेश को नहीं मानेंगे।

मैनेजर : ठीक है। वापस ले जाओ इन दुष्ट हाथियों को। लाओ मेरी बंदूक। मैं इनका फैसला कर देता हूँ।

वसु : ठहरो। तुम इन हाथियों पर और अधिक अत्याचार नहीं कर सकते।

मैनेजर : कौन हो, तुम लोग? हमारे प्रोग्राम में क्यों दखल देते हो!

निशांत : तुम सरकस के मालिक हो। हम सब दर्शक हैं। हम सब तुम्हारे मालिक हैं।

धवल : हम सब 'जानवरों को बचाओ समिति' के सदस्य हैं। देश के सभी बच्चे इस संस्था के समर्थक हैं।

मैनेजर : ठीक है। आज का शो कैंसिल किया जाता है।

[मैनेजर एवं रिंगमास्टरों का प्रस्थान।]

वसु : हाथी राजा, हम मनुष्य के सभी दुर्व्यवहारों के लिए क्षमा माँगते हैं। हाथी रानी तुम भी हमें माफ कर दो।

निशांत : हाथी राजा, हम वादा करते हैं कि अब देश में और जंगल नहीं काटे जायेंगे।

धवल : हम वादा करते हैं कि अब जानवरों पर और अत्याचार नहीं होगा।

कुशल : हाथी राजा, हम मनुष्य पशु समाज के बीच नये सम्बन्धों की रचना करेंगे।

हाथी रानी : हाथी राजा, मेरे संगीत-प्रेम के कारण ही हाथीराज नष्ट हो गया। मनुष्य ने हमारे साथ बहुत दुर्व्यवहार किया है। पर इन बच्चों पर विश्वास करने की इच्छा होती है।

वसु : हाथी राजा, जो कुछ हुआ है उसका हमें गहरा दुख है।

[बाँसुरी की आवाज।]

हाथी रानी : अरे, यह बाँसुरी कौन बजा रहा है!

वसु : चौरसिया जी, आज के समारोह के मुख्य अतिथि हैं। वे कहीं तनाव देखते हैं तो बाँसुरी बजाने लगते हैं।

हाथी राजा : इनका संगीत सचमुच बहुत मधुर है।

हाथी रानी : हाथी राजा, इसी संगीत की रक्षा के लिए हमने अपना सब कुछ होम कर दिया। पर हमारे निर्णय से एक महान कला बच गई।

वसु : हाथी राजा, मनुष्य को एक बार और माफ कर दो। हम वादा करते हैं कि हम मनुष्य को हाथी जैसा सभ्य और समझदार प्राणी बना देंगे।

हाथी राजा : ठीक है, बच्चो। एक काले इतिहास को मर जाने दो। चौरसिया जी से कहो कि ऐसी ही धुन बजाते रहें। हम एक सुनहले भविष्य के लिए इंतजार कर सकते हैं।

[बाँसुरी की एक तान।]

सभी बच्चे : डमडम डमडम बजता बाजा,
नाचो-नाचो, हाथी राजा।

रिमझिम रिमझिम बरसे पानी,
नाचो-नाचो, हाथी रानी।

[सभी बच्चे हाथी राजा और हाथी रानी को बीच में रखकर घेरे में नाचते हैं।]

[प्रकाश बुझता है।]

मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है?

पात्र

मुर्गा राजा
मुर्गी रानी
मुर्गी–1, मुर्गी–2, मुर्गी–3, मुर्गी–4
शेर राजा
हाथी राजा
मगर राजा
सांड राजा
डुग्गी वाला–1/कोर्ट प्यून–1
डुग्गी वाला–2/कोर्ट प्यून–2
जाँच आयुक्त
पेशकार
सरकारी वकील
सफाई का वकील
प्रधान मंत्री
कृष्णा स्वामी
आर्मी कमांडर
पुलिस कमिश्नर
नागरिक–1
नागरिक–2
अखबार विक्रेता, पत्रकार तथा न्यूज रीडर

1

[मुर्गा राजा, मुर्गी रानी, और मुर्गियों की टोली नाच रही है।]

(गीत)

कुकडूं कूं, कुकडूं कूं, भइया,
कुकडूं कूं, कुकडूं कूं, बाई।
रंग उड़ाओ, होली आई।
जोगीरा सरररर, जोगीरा सरररर
जोगीरा सरररर, जोगीरा सरररर।

आओ मिलकर धूम मचाएँ
कुकडूं कूं भई कुकडूं कूं,
धरती अंबर धूल उड़ाएँ,
कुकडूं कूं भई कुकडूं कूं
जोगीरा सरररर, जोगीरा सरररर,
जोगीरा सरररर, जोगीरा सरररर,

खेतों में बिखरा है दाना,
कुकडूं कूं भई कुकडूं कूं।
कोयल ने छेड़ा है गाना,
कुकडूं कूं भई कुकडूं कूं।
जोगीरा सरररर, जोगीरा सरररर,
जोगीरा सरररर, जोगीरा सरररर।

[दो डुग्गीवालों का प्रवेश।]

पहला : सुनो-सुनो, भई सुनो-सुनो!

दूसरा : नगरवासियो सुनो! ग्रामवासियो सुनो!

पहला : सरकार के पशुपालन विभाग में दो हजार करोड़ रुपये का घोटाला पाया गया है।

दूसरा : हमारे लोकप्रिय मुख्य मंत्री ने इस घोटाले की जाँच के लिए एक जाँच आयोग की नियुक्ति की है।

मुर्गी रानी : मुर्गा राजा, कुछ समझ में नहीं आया। ये घोटाला किस चीज का नाम है?

मुर्गा राजा : मुर्गी रानी, घोटाला कोकोकोला की तरह एक ड्रिंक है।

मुर्गी रानी : मुर्गा राजा, ये जाँच आयोग किस चिड़िया का नाम है?

मुर्गा राजा : जाँच आयोग एक नये तरह का खेल है। इस खेल में एक-दूसरे पर कीचड़ फेंका जाता है।

डुग्गी वाला : सुनो, सुनो! सरकारी दस्तावेज के मुताबिक इस घोटाले में मुर्गियों का बहुत बड़ा हाथ है।

मुर्गी रानी : मुर्गा राजा, यह क्या कह रहा है।

मुर्गा राजा : यह मुर्गी जाति पर इलजाम लगा रहा है।

डुग्गी वाला-1 : सुनो, सुनो!
शहर की मुर्गियाँ!
गाँव की मुर्गियाँ!

डुग्गी वाला-2 : देसी मुर्गियाँ। विलायती मुर्गियाँ।

डुग्गी वाला-1 : गोरी मुर्गियाँ, काली मुर्गियाँ। सभी सुनो!

डुग्गी वाला-2 : सभी मुर्गियों को आदेश दिया जाता है कि वे अपने वकील के साथ आयोग के सामने आज बारह बजे हाजिर हों।

डुग्गी वाला-1 : सुनो, सुनो, नगर की मुर्गियाँ, गाँव की मुर्गियाँ।

[डुग्गीवालों का प्रस्थान।]

मुर्गी-1 : मुर्गा राजा, यह अभियोग तो सरासर झूठ है।

मुर्गी-2 : मुर्गा राजा, यह एक साजिश है। असली मुजरिम को बचाने के लिए हमें फँसाया जा रहा है।

मुर्गी-3 : मुर्गा राजा, सरकार मुर्गी जाति का अपमान कर रही है।

मुर्गी-4 : मुर्गा राजा, हमें इस जाल में नहीं फँसना चाहिए।

मुर्गा राजा : मुर्गियो, जो कुछ तुमने कहा है, सच है। पर सरकार ने हमें जाँच आयोग के सामने बुलाया है। हमें क्या करना चाहिए?

मुर्गी-1 : हमें जाँच आयोग का बहिष्कार करना चाहिए।

सभी मुर्गियाँ : जाँच आयोग। हाय-हाय!

मुर्गा राजा : मुर्गियो, मैं तुम्हारा विचार समझता हूँ। पर एक गलत चीज को सबके सामने गलत कहना होगा।

मुर्गी रानी : हाँ, यह ठीक है। हमें जाँच आयोग के सामने जाकर इस साजिश का भंडाफोड़ करना चाहिए।

मुर्गी-1 : लेकिन हमें एक झूठे मुकदमे में फँसाया गया है।

मुर्गी-2 : जो हुआ, सो हुआ। लेकिन हम अत्याचार नहीं सहेंगे।

मुर्गी-3 : सुना था कि मुर्गियों का अलग ईश्वर है।

मुर्गी-4 : हमारा ईश्वर सो गया है। वह हमें बनाकर, पूरी तरह से भूल गया।

2

[स्थान : जाँच आयोग का दफ्तर। समय : सुबह 11 बजे। आयुक्त की कुर्सी खाली है। बगल में पेशकार का टेबुल है। सामने हैं सरकारी वकील और सफाई के वकील। आयुक्त का प्रवेश। सरकारी प्यून आवाज देता है।]

प्यून-1 : मुर्गा राजा, मुर्गी रानी और दूसरी मुर्गियाँ हाजिर हों।
[मुर्गा राजा, मुर्गी रानी और चारों मुर्गियों का प्रवेश। पेशकार मुर्गियों को शपथ दिलाता है।]

आयुक्त : अब मुजरिम का जुर्म बयान किया जाय।

सरकारी वकील : हुजूर, मुर्गियों का जुर्म बहुत संगीन है। पिछले एक वर्ष में सरकारी खजाने से दो हजार करोड़ रुपये की चोरी हुई है। इसमें हजार करोड़ रुपये की चोरी मुर्गियों ने की है। मुर्गियों ने सरकारी खजाने से इस राशि को निकाला। यह पैसा गलत तरीके से निकाला गया। इसे गलत तरीके से खर्च किया गया।

मुर्गा राजा : आयुक्त महोदय, सरकारी खजाने से रुपया पशु पालन विभाग के डायरेक्टर निकालते हैं। मुर्गियों ने यह काम कभी नहीं किया।

सरकारी वकील : अभियोग है कि मुर्गियों ने डायरेक्टर को पैसा निकालने पर मजबूर किया।

मुर्गा राजा : सर, हजार करोड़ बहुत बड़ी रकम होती है। दो हजार मुर्गियाँ साल-भर में अधिक से अधिक दस लाख का चारा खायेंगी।

सरकारी वकील : सर, सबूत के मुताबिक मुर्गियों ने प्रति दिन आठ सौ पंद्रह रुपये का चारा खाया है। अभियोग है कि मुर्गियों का दल इस चारे को लाने अमेरिका गया था। अभियोग है कि मुर्गियाँ अमेरिका में फाइव-स्टार होटलों में ठहरीं और बहुत कीमती डिशेज खाती थीं। अभियोग है कि मुर्गियों ने स्विट्जरलैंड में अनेक खाते खोल रखे हैं।

मुर्गा राजा : आयुक्त महोदय, यह एक झूठा मुकदमा है। मुजरिम कोई और है। उसे बचाने के लिए हमें बलि का बकरा बनाया जा रहा है।

सरकारी वकील : आरोप है कि मुर्गियों ने लंदन और पेरिस में करोड़ों रुपये के कीमती कपड़े खरीदे।

मुर्गा राजा : आयुक्त महोदय, यह आरोप बिल्कुल हास्यास्पद है। सब जानते हैं कि हम आदमियों के तरह कपड़े नहीं पहनते।

सरकारी वकील : आरोप है कि मुर्गियों ने पेरिस के ब्यूटी-पार्लर में करोड़ों रुपये खर्च किये।

मुर्गी रानी : यह भी झूठ है। प्रकृति ने हमें पूरी तरह सजा कर भेजा है। हमें ब्यूटी पार्लर में जाने की कोई जरूरत नहीं है।

आयुक्त : मुर्गा राजा, मनुष्य तुम्हारा पालनहार रहा है। उसने जंगली जानवरों से तुम्हारी रक्षा की। उसने तुम्हारे लिए चारे की व्यवस्था की। तुम्हें मनुष्य के प्रति एहसानमंद होना चाहिए।

मुर्गी रानी : आपने जो कुछ कहा है सच है। पर मनुष्य हमारा रक्षक ही नहीं, हमारा भक्षक भी है। उसने हमारी जाति पर अगणित अत्याचार किए हैं।

आयुक्त : यह सच नहीं है।

मुर्गी रानी : मनुष्य हमारे अंडों को ही नहीं, हमारे बच्चों को भी खाता है। अब तो वह पूरा मुर्ग मुसल्लम खा रहा है।

आयुक्त : मुर्गी रानी, तुम तो मेनका गांधी की तरह बोल रही हो।

मुर्गी रानी : मैं आपको एक अनुभव सुनाती हूँ। एक दिन डायरेक्टर महोदय ने हमें डिनर के लिए बुलाया। हम खुशी-खुशी डिनर में शामिल हुए। पर डायरेक्टर साहब ने हमें पीने के लिए चिकेन सूप दिया। यह हमारा सरासर अपमान था।

आयुक्त : कभी-कभी ऐसी गलती हो जाती है।

मुर्गी रानी : उस दिन मैंने आदमी को शाप दिया। मैंने कहा—डायरेक्टर, तुमने हमें पीने के लिए हमारे ही बच्चों का सूप दिया है। याद रखो, एक दिन तुम भी अपने बच्चों का सूप पियोगे।

सरकारी वकील : सर, मुर्गी रानी आयोग का समय बर्वाद कर रही हैं।

सफाई का वकील : हुजूर, मुर्गियों के खिलाफ कोई पक्का सुबूत नहीं है।

सरकारी वकील : सर, दूसरे सुबूत भी हैं। मुर्गियाँ पहले साल में एक सौ अंडे देती थीं। पिछले साल विभाग की मुर्गियों ने दो सौ से तीन सौ अंडे दिये हैं। इसका कारण इनका फाइवस्टार भोजन है।

मुर्गा राजा : सर, मुर्गियों की नसल सुधारने के लिए कुछ मुर्गे विदेश से मँगाये गये थे।

आयुक्त : तब विदेशी चारे की बात भी ठीक है। विदेशी मुर्गियाँ हमेशा विदेशी चारा ढूँढ़ती हैं।

मुर्गा राजा : नहीं सर, यह सब झूठ है।

आयुक्त : अब मैं अपना फैसला सुना रहा हूँ। मैंने दोनों पक्षों का बयान सुना है। पशु पालन विभाग में दो हजार करोड़ का घोटाला हुआ है। मुझे विश्वास है कि इस घोटाले का लाभ मुर्गियों को भी मिला है। मैं फिलहाल मुर्गियों की गिरफ्तारी का आदेश देता हूँ। साथ ही उन्हें जमानत पर रिहा करता हूँ। पर जाँच की अवधि में मुर्गियों का पासपोर्ट जब्त रहेगा। अदालत बरखास्त।

[आयुक्त, सरकारी वकील और सफाई के वकील का प्रस्थान।]

मुर्गी-1 : मुर्गा राजा, जाँच आयुक्त ने हमें दोषी करार कर दिया।

मुर्गी-2 : उसने हमारे किसी तर्क को नहीं सुना।

मुर्गी-3 : लोगों का कहना है कि जाँच आयुक्त पशु पालन विभाग के डायरेक्टर का साला है।

मुर्गी-4 : मुर्गा राजा, कुछ लोग कह रहे थे कि जाँच आयुक्त पहले पशु पालन विभाग में काम करता था।

मुर्गा राजा : जो हुआ, सो हुआ। अब हमें क्या करना चाहिए?

मुर्गी रानी : हमें विरोध करना चाहिए। हमें आन्दोलन करना चाहिए।

सभी मुर्गियाँ : जाँच आयोग। हाय-हाय!

मुर्गा राजा : सिर्फ नारा लगाने से कुछ नहीं होगा। हमें लड़ना होगा।

मुर्गी रानी : हमें दूसरे जानवरों की मदद लेनी चाहिए।

मुर्गा राजा : हाँ, यह ठीक है। मुर्गियाँ तुम लोग जाकर शेर राजा, हाथी राजा और मगर राजा को बुला लाओ।

[मुर्गियों का प्रस्थान।]

मुर्गी रानी : मुर्गा राजा, आदमी बहुत शक्तिशाली जानवर है।

मुर्गा राजा : हमारे सामने दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

[मुर्गी-1 के साथ शेर राजा का प्रवेश।]

मुर्गा राजा : शेर राजा हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। आदमी का अत्याचार बढ़ता जा रहा है। हम सबको मिलकर एक मोर्चा खड़ा करना चाहिए।

शेर राजा : मुर्गा राजा, हमें तुम्हारे साथ सहानुभूति है। पर सहायता की बात थोड़ी मुश्किल है।

लोग हमें जंगल का राजा कहते हैं। पर अब स्थिति बिल्कुल बदल गई है। अब हम चिड़ियाघर में रहते हैं। सरकस में खेल दिखाते हैं। मनुष्य हमारा मालिक बन गया है। हम मनुष्य के खिलाफ मोर्चा नहीं बना सकते हैं। हमें क्षमा करो।

मुर्गा राजा : शेर राजा, सबकी अपनी मजबूरियाँ होती हैं। क्षमा माँगने की कोई जरूरत नहीं है।

[शेर राजा का प्रस्थान। हाथी राजा का प्रवेश।]

मुर्गा राजा : हाथी राजा, मनुष्य का अत्याचार बढ़ता जा रहा है। उसने हमें हजार करोड़ रुपये के घोटाले में फँसा दिया है।

हाथी राजा : मुर्गा राजा, तुम आदमी से लड़ना चाहते हो। पर क्या तुम्हें अपनी शक्ति का अन्दाजा है। मैं तुमसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ।

क्या तुम्हारे पास हजार ए. के.-47 बंदूकें हैं?

मुर्गा राजा : नहीं।

हाथी राजा : क्या तुम्हारे पास हजार फाइटर प्लेस हैं?

मुर्गा राजा : नहीं।

हाथी राजा : क्या तुम्हारे पास हजार राकेट लांचरस् हैं?

मुर्गा राजा : नहीं।

हाथी राजा : क्या तुम्हारे पास ऐटम बम का फारमूला है?

मुर्गा राजा : नहीं, हमारे पास ऐसा कुछ नहीं है।

हाथी राजा : अंतिम सवाल। क्या तुम्हारे पास नोटों से भरा सूटकेस

है ?

मुर्गा राजा : नहीं भइया, हमें इतना नोट कौन देगा ?

हाथी राजा : तब तुम किस बूते पर आदमी को ललकार रहे हो। जहाँ तक हाथियों का सवाल है हम अब टूरिस्ट विभाग के कर्मचारी हैं। आदमी से लड़कर हमें क्या मिलेगा।

[हाथी राजा का प्रस्थान। मगर राजा का प्रवेश।]

मगर राजा : मुर्गा राजा, तुमने हमें बुलाया है। कोई समस्या है।

मुर्गा राजा : मगर राजा, मनुष्य की क्रूरता बढ़ती जा रही है। हम मिलकर ही उसका मुकाबला कर सकते हैं।

मगर राजा : मुर्गा राजा, बहुत बुरे दिन आ गये हैं। नदियों का जल बहुत प्रदूषित हो गया है। हम अब मनुष्य के बनाये तालाबों में रहते हैं। सच यह है कि हम कुत्ते और बिल्ली से ज्यादा पालतू हो गये हैं।

[मगर राजा का प्रस्थान।]

मुर्गी रानी : सभी पशु नेता चले गये। कोई मनुष्य से लड़ना नहीं चाहता।

मुर्गा राजा : कोई बात नहीं। हम अकेले ही लड़ेंगे। हम दिल्ली में संसद के सामने विराट मुर्गी रैली आयोजित करेंगे।

[सांड राजा का प्रवेश।]

सांड राजा : मुर्गा राजा, तुम अकेले नहीं हो। हम तुम्हारे साथ हैं।

मुर्गा राजा : सांड राजा, तुम्हारा स्वागत है।

सांड राजा : पशु पालन विभाग ने हमारा भी घोर अपमान किया है। गौओं की नस्ल सुधारने के लिए पाँच हजार सांड विदेशों से मँगाये गए थे। डायरेक्टर का कहना है कि वे सभी सांड साल-भर के भीतर मर गये। उन्हें एड्स की बीमारी थी।

मुर्गा राजा : यह सरासर झूठ है।

सांड राजा : मुर्गा राजा, हम तुम्हारी दिल्ली रैली में शामिल होंगे।

[अखबार विक्रेता का प्रवेश।]

अखबार विक्रेता : आज की ताजा खबर! पशु पालन विभाग का डायरेक्टर फरार! दिल्ली में मुर्गी रैली की तैयारी।

[मुर्गी रानी अखबार खरीदती है, अखबार विक्रेता का प्रस्थान।]

मुर्गा राजा : मुर्गी रानी, जरा अखबार पढ़ो न।

मुर्गी रानी : **(पढ़ती है)** सुप्रीम कोर्ट ने चारे घोटाले की जाँच का मामला सी. बी. आई. के सुपुर्द कर दिया है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश से पशु पालन विभाग का डायरेक्टर भयभीत होकर फरार हो गया है।

उधर केन्द्रीय सरकार ने मुर्गी रैली की खबर को बहुत गंभीरता से लिया है। दिल्ली के चारों तरफ कँटीले तारों की बाड़ लगायी जा रही है।

मुर्गा राजा : यह तो मूर्खता की हद है।

सांड राजा : जो भी हो, डायरेक्टर कानून की गिरफ्त में आ गया।

मुर्गा राजा : सांड राजा, हमें लगता है कि अब दिल्ली रैली की कोई जरूरत नहीं है।

[मुर्गा राजा और सांड राजा का प्रस्थान। अखबार विक्रेता का प्रवेश।]

अखबार विक्रेता : आज की ताजा खबर! आज की ताजा खबर! मुर्गा राजा गिरफ्तार! मुर्गा राजा गिरफ्तार!

[मुर्गी रानी और मुर्गियों का प्रवेश। मुर्गी रानी अखबार पर सरसरी निगाह डालती है।]

मुर्गी-1 : मुर्गी रानी अखबार में क्या है! अखबार वाला मुर्गा राजा के बारे में कुछ कह रहा था।

मुर्गी रानी : बड़ी भयानक खबर है। हमें धोखा दिया गया है। सरकार ने मुर्गा राजा को गिरफ्तार कर लिया है। उन्हें तिहाड़ जेल में भेज दिया गया है।

मुर्गी-2 : यह तो सचमुच विश्वासघात है।

मुर्गी-1 : लेकिन मुर्गा राजा का जुर्म क्या है?

मुर्गी रानी : सरकार का कहना है कि मुर्गा राजा मनुष्य और पशुओं की बीच नफरत फैला रहा था।

मुर्गी-3 : मुर्गी रानी यह एक चुनौती है। हमें इसका जवाब देना चाहिए।

मुर्गी रानी : तुम लोग इंतजार करो। मैं तिहाड़ जेल में मुर्गा राजा से मिलकर आती हूँ।

[मुर्गी रानी का प्रस्थान। एक नागरिक और एक पत्रकार का प्रवेश।]

पत्रकार : भाई साहब, मैं दिल्ली समाचार का प्रतिनिधि हूँ। आपसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ।

नागरिक-1 : पूछिये, क्या पूछना है।

पत्रकार : मुर्गा राजा की गिरफ्तारी पर आपको क्या कहना है?

नागरिक-1 : देखिये साहब, यह सब महज नाटक है।

पत्रकार : पशुपालन घोटाले पर आपको क्या कहना है!

नागरिक-1 : देखिये साहब, मैं एक रिटायर्ड किरानी हूँ। जिन्दगी-भर रुपया-अठन्नी घूस लिया। अब लोग हजार करोड़ का घोटला करते हैं। हमें मौका नहीं मिला, इसका दुख है।

[नागरिक-1 का प्रस्थान। नागरिक-2 का प्रवेश।]

पत्रकार : भाई साहब, मुर्गा राजा गिरफ्तार हो गया। आपको क्या कहना है?

नागरिक-2 : देखो भइया, राजनीति बड़े लोगों की चीज है। यह मुर्गियों के बस की बात नहीं है।

पत्रकार : भाई साहब, भ्रष्टाचार के बारे में आपको क्या कहना है।

नागरिक-2 : भइया भ्रष्टाचार एक मजाक बन गया है—एक शेर सुना रहा हूं।

शेख यह कहता रहा, फिर भी वह पीता रहा,
साकी शराब कुफ्र है, इसका पीना है बुरा।

[नागरिक-2 का प्रस्थान।]

पत्रकार : वेल मुर्गियाँ, सरकार ने मुर्गा राजा को गिरफ्तार कर लिया

है। तुम्हें इसके बारे में क्या कहना है?

मुर्गी-1 : यह हमारे लिए जबरदस्त चुनौती है। जीवन और मृत्यु का संघर्ष है।

[पत्रकार का प्रस्थान। मुर्गी रानी का प्रवेश।]

मुर्गी-1 : मुर्गी रानी क्या हुआ?

मुर्गी-2 : मुर्गा राजा से भेंट हुई।

मुर्गी रानी : हाँ, मुर्गी राजा से भेंट हुई। उन्होंने एक संदेश भेजा है।
(संदेश पढ़ती है)
प्यारी मुर्गियो,
यह युद्ध हमारे लिए जीवन और मृत्यु का युद्ध है। मुर्गियो, एक छोटे कद के गांधी ने विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य को मटियामेट कर दिया था। आज तुम भी वैसे ही संकल्प का प्रदर्शन करो।

तुम्हारे मुर्गा राजा

मुर्गी-1 : जो हमसे टकरायेगा,

सब : चूर-चूर हो जायेगा।

मुर्गी रानी : मुर्गा राजा ने हमें तीन मंत्र दिये हैं—(1) दिल्ली चलो। (2) दिल्ली घेरो। (3) सरकार को झुकने पर मजबूर करो।

सभी मुर्गियाँ : हम सब तैयार हैं।

मुर्गी रानी : तब सब ठीक ठाक है। चारों मुर्गियाँ चारों दिशाओं में जाओ। देश की मुर्गियों को मुर्गा राजा का पैगाम दो।

सभी मुर्गियाँ : मुर्गा राजा, जिन्दाबाद!

[सभी मुर्गियों का प्रस्थान। अखबार विक्रेता का प्रवेश।]

दिल्ली समाचार! आज की ताजा खबर! मुर्गा राजा की गिरफ्तारी पर देश-भर की मुर्गियों में हलचल। मुर्गियों ने गले में काला फीता बाँधा। दिल्ली में मुर्गी रैली की तैयारी। आज की ताजा खबर!

[अखबार विक्रेता का प्रस्थान। चारों मुर्गियों का प्रवेश।]

मुर्गी–2 : मुर्गी रानी कहाँ हैं ?

मुर्गी–1 : धीरे बोलो। पुलिस मुर्गी रानी को ख़ोज रही है। मुर्गी रानी अंडरग्राउंड हो गयी है।

मुर्गी–2 : पूर्वी क्षेत्र में आन्दोलन का क्या हाल है ?

मुर्गी–1 : बहुत अच्छा है। बंगाल, बिहार और यू. पी. की मुर्गियाँ कल दिल्ली पहुँच जायेंगी।

मुर्गी–2 : पंजाब–हरियाणा–हिमाचल की मुर्गियाँ भी आज किसी समय दिल्ली पहुँच सकती हैं।

मुर्गी–3 : उत्तरांचल की मुर्गियों में बहुत उत्साह है। पर उनके दिल्ली पहुँचने में चार–पाँच दिन लग सकते हैं।

मुर्गी–4 : सबसे बड़ा सवाल है कि क्या दिल्ली की मुर्गियाँ भी शामिल होंगी। मैंने उन्हें काफी समझाया है।

[मुर्गियों का प्रस्थान। अखबार विक्रेता का प्रवेश।]

अखबार विक्रेता : दिल्ली समाचार आज की ताजा खबर! दिल्ली पर विराट मुर्गी रैली की छाया। पंजाब–हरियाणा–हिमाचल की मुर्गियों का दिल्ली में प्रवेश। आज की ताजा खबर!

[अखबार विक्रेता का प्रस्थान। दो नागरिकों का प्रवेश। दोनों के हाथ में शराब की बोतलें हैं।]

नागरिक–1 : भइया, तुमने कुछ सुना। दिल्ली पर मुर्गियों का हमला होने वाला है।

नागरिक–2 : तुम तो पूरे पागल हो। कहीं मुर्गियाँ हमला करती हैं। सब चंडूखाने की गप्प है।

नागरिक–1 : क्या कहते हो। अखबार वाला कह रहा था। अखबार वाला झूठ थोड़े ही बोलता है।

नागरिक–2 : ठीक है, मुर्गियों को आने दो। सरकार निपटेगी। हमें क्या करना है।

नागरिक–1 : सरकार ने दिल्ली के चारों ओर कँटीले तारों की बाड़ लगा

दी है।

नागरिक-2 : यह भी पागलपन है। कहीं काँटों की बाड़ से मुर्गियों को रोका जा सकता है। खैर, आने दो। हम सब मुर्ग मुसल्लम खायेंगे।

[दोनों नागरिकों का प्रस्थान। उद्घोषक और पुलिस कमिश्नर का प्रवेश।]

उद्घोषक : यह आकाशवाणी, दिल्ली है। हम एक विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। दिल्ली के पुलिस कमिश्नर श्री सक्सेना जनता को अपना संदेश देंगे।

पुलिस कमिश्नर : दिल्ली की बहनो और भाइयो, दिल्ली की सीमा पर मुर्गियों के जमाव से तरह-तरह की अफवाहें फैल रही हैं। इनका निराकरण करना सरकार का कर्तव्य है। हमने दिल्ली के चारों ओर काँटों की बाड़ लगा दी है। अगर मुर्गियों ने उसे लाँघा तो हमारे सिपाही लाठियों से उनका स्वागत करने को तैयार हैं। मुर्गियों ने दिल्ली को घेर कर बहुत मूर्खता का परिचय दिया है। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे। जय हिन्द।

[उद्घोषक और पुलिस कमिश्नर का प्रस्थान। दोनों नागरिकों का प्रवेश। दोनों के हाथ में खाली बोतलें हैं।]

नागरिक-2 : क्यों भइया, तुम्हारी बोतल में कुछ है?

नागरिक-1 : कुछ नहीं है। मुर्गियों के डर के मारे सभी दुकानें बंद हैं।

नागरिक-2 : नाश हो इन मुर्गियों का। वैसे मुर्गियाँ अब कहाँ हैं?

नागरिक-1 : मुर्गियों ने कँटीले तारों की बाड़ को पार कर लिया है। अब वे दिल्ली की सड़कों पर टहल रही हैं।

नागरिक-2 : मजा आ गया। मजा आ गया। एक बात बोलो भइया। अपने प्राइम मिनिस्टर कहाँ हैं? क्या कर रहे हैं?

नागरिक-1 : लगता है कि तुम अखबार नहीं पढ़ते। प्राइम मिनिस्टर अमेरिका गए थे। अब वे दिल्ली आ गए हैं।

नागरिक-2 : लोग कह रहे थे कि मुर्गियाँ अशोका होटल में घुस गई थीं। होटल का सारा पकवान चट कर गईं।

नागरिक-1 : मुर्गियाँ सभी होटलों पर धावा बोल रही हैं। उन्होंने सभी होटलों पर कब्जा कर लिया है।

नागरिक-2 : मजा आ गया। मजा आ गया। यह सब बिना पैसे का तमाशा है।

[नागरिकों का प्रस्थान। उद्घोषकों का प्रवेश।]

उद्घोषक : ये आकाशवाणी, दिल्ली है। हम एक विशेष सूचना प्रसारित कर रहे हैं।

हमें खेद है कि पुलिस की कोशिशों के बावजूद मुर्गियाँ शहर में घुस गयी हैं।

मुर्गियों ने अभी तक किसी प्राइवेट मकान पर हमला नहीं किया है। पर आप अपनी सुरक्षा के लिए खिड़की-दरवाजों को बंद रखें।

कृपया भयभीत न हों। दिल्ली की पुलिस आपके जान-माल की रक्षा के लिए तत्पर है, तत्पर रहेगी।

[उद्घोषक का प्रस्थान। एक तरफ से प्रधानमंत्री, दूसरी तरफ से पुलिस कमिश्नर का प्रवेश।]

प्रधानमंत्री : कमिश्नर साहब, लेटेस्ट सिचुएशन क्या है?

कमिश्नर : सर, हरियाणा-पंजाब की मुर्गियाँ कँटीले तारों को लाँघ कर शहर में घुस गयी हैं। यू. पी., बिहार की मुर्गियों को रोकने के लिए जमुना के सभी पुलों को तोड़ दिया गया है।

प्रधानमंत्री : आपकी घेराबन्दी को तोड़कर मुर्गियाँ शहर में घुस गईं— यह तो बहुत अच्छी खबर है।

कमिश्नर : सर, पुलिस क्या कर सकती है। गोली चलाकर तो मुर्गियों को नहीं कंट्रोल किया जा सकता। अगर हम टीयर गैस का प्रयोग करें तो जनता को कष्ट होगा। हमने कुत्तों का प्रयोग किया पर लाखों मुर्गियों के सामने कुत्ते नहीं टिक

सके।

प्रधानमंत्री : आपको मालूम है कि मुर्गियों ने फूड कारपोरेशन के गोदाम का सफाया कर दिया।

कमिश्नर : हाँ सर, हमें रिपोर्ट मिली है।

प्रधानमंत्री : अगर चौबीस घंटे के भीतर स्थिति कंट्रोल में नहीं आई तो मैं सेना को बुला लूँगा।

कमिश्नर : ठीक है, सर।

[प्रधानमंत्री और कमिश्नर का प्रस्थान। दोनों नागरिकों का प्रवेश।]

नागरिक-2 : भइया, कई दिनों से दारू नहीं मिली। माथा बुरी तरह से घूम रहा है।

नागरिक-1 : माथे को घूमने दो। मुर्गियाँ दारू की महक से बुरी तरह से भड़कती हैं।

नागरिक-2 : अच्छा भइया, लेटेस्ट खबर क्या है?

नागरिक-1 : उत्तराखंड की मुर्गियाँ भी दिल्ली में दाखिल हो गई हैं।

नागरिक-2 : फिलिम वाला मजा आ रहा है। थोड़ा-सा ढिशुंग-ढिशुंग हो जाय तो पैसा वसूल हो जाय।

[नागरिकों का प्रस्थान। एक तरफ से प्रधानमंत्री, दूसरी तरफ से आर्मी के कमांडर का प्रवेश।]

कमांडर : सर, हमने शहर का चार्ज ले लिया है। हमारी गाड़ियाँ सड़कों पर लगातार दौड़ रही हैं। कोशिश है कि सड़कों पर मुर्गियों का जमाव न हो।

प्रधानमंत्री : लेकिन सबका नेट रिजल्ट क्या है। मुर्गियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

कमांडर : सर, हम क्या कर सकते हैं। हम मुर्गियों पर फायर कर देख चुके हैं। दस-बीस मुर्गियाँ मरती हैं पर बची मुर्गियाँ अधिक आक्रामक हो जाती हैं।

प्रधानमंत्री : मुर्गियाँ पूरा इंस्टिट्यूट का सारा अनाज खा गईं। वे राष्ट्रपति भवन में भी घुसने का प्रयत्न कर रही हैं।

कमांडर : सर, हमने राष्ट्रपति भवन के लिए विशेष प्रबन्ध किया है। वहाँ मुर्गियाँ तो क्या मच्छर भी नहीं घुस सकता।

[प्रधानमंत्री और कमांडर का प्रस्थान। उद्घोषक का प्रवेश।]

उद्घोषक : यह आकाशवाणी, दिल्ली है। अब हमारा एक विशेष प्रसारण होगा। प्रधानमंत्री दिल्ली की जनता के नाम संदेश देंगे।

प्रधानमंत्री : दिल्ली के नगरवासियो, आज दिल्ली के सामने एक अजीब तरह का संकट आया है। मुर्गियाँ इतनी खतरनाक हो सकती हैं। हम नहीं जानते थे।

जो भी हो, मुर्गियाँ आदमी का मुकाबला नहीं कर सकती। हमने शहर की सुरक्षा का भार आर्मी को दे दिया है। हमें जनता की असुविधाओं पर खेद है। आपके सहयोग से इस मामले का जल्दी ही समाधान हो जायगा। धन्यवाद।

[जन-गण-मन की धुन। सेना के कमांडर का प्रवेश।]

कमांडर : सौरी सर, आपकी सलाह लेना जरूरी था। हमारी मोर्चाबन्दी के बावजूद मुर्गियाँ राष्ट्रपति भवन में घुस गयी हैं।

प्रधानमंत्री : लेकिन, यह कैसे हुआ ?

कमांडर : मुर्गियों के पास एक स्यूसाइड स्क्वैड है। वह पेड़ों पर चढ़ गया और गोलियों की बौछारों के बीच मुगल गार्डेन में कूद गया।

प्रधानमंत्री : हमें राष्ट्रपति जी का फोन मिला है। राष्ट्रपति जी मुर्गियों को चारा खिला रहे हैं। हमने अमेरिका के डिफेंस सेक्रेटरी से बात की है। उन्होंने वाटर बुलेट का प्रयोग करने की सलाह दी है।

कमांडर : हमने भी वाटर बुलेट को यूज किया। पर दिल्ली में पानी की बेहद कमी है। हम लाचार हो गए।

[आर्मी कमांडर का प्रस्थान। स्वामी कृष्णानन्द का प्रवेश।]

प्रधानमंत्री : आइये स्वामी जी।

स्वामी : मंगल हो। कहिये कैसे स्मरण किया?

प्रधानमंत्री : स्वामी जी, अब आप ही रक्षा कीजिये। मुर्गियों ने सरकार को बेइज्जत कर दिया। मैं संसद से क्या कहूँगा। विदेशों में लोग हँस रहे हैं।

स्वामी : महामहिम, यह एक ईश्वरीय प्रकोप है। जनता को दंडित करने के लिए ईश्वर ने महामारी भेजी है।

प्रधानमंत्री : स्वामी जी, जनता नहीं, हम दंडित हो रहे हैं। कुछ कीजिये, नहीं तो हमारी इज्जत धूल में मिल जायगी।

स्वामी : प्रधानमंत्री जी, शायद आपको मालूम नहीं है। मुर्गियाँ आज हमारे आश्रम में घुस गईं। उन्होंने सब कुछ बरबाद कर दिया। वे हमारा शिकार करना चाहती थीं।

प्रधानमंत्री : वेरी सौरी! देखिये स्वामी जी, आप हमारे गार्जियन हैं। आपके बिना हम कुछ नहीं कर पायेंगे।

स्वामी : देखो भाई, हवाला-घोटाला का मामला होता या पार्टी की उठा-पटक होती तो मैं एक फूँक में सब कुछ ठीक कर देता। पर मुर्गियों के बारे में मैं क्या कर सकता हूँ।

प्रधानमंत्री : स्वामी जी, आप चाहें तो सब कुछ कर सकते हैं।

स्वामी : अच्छा, देखता हूँ। शास्त्रों में कुछ मारक मंत्र हैं। उनका प्रयोग करता हूँ।

[स्वामी जी जाने को तैयार होते हैं। नेपथ्य से मुर्गियों की 'कुकड़ूँ कूँ' सुनाई पड़ती है।]

स्वामी : अरे बाप रे, यहाँ भी मुर्गियाँ आ गईं। नहीं प्रधानमंत्री जी, मैं मुर्गियों का मुकाबला नहीं कर सकता।

प्रधानमंत्री : क्या हुआ स्वामी जी, आखिर ये मुर्गियाँ हैं, कोई शेर तो नहीं हैं।

स्वामी : नहीं-नहीं, मैं कुछ नहीं करूँगा। ये मुर्गियाँ मेरी जान ले

लेना चाहती हैं।

[स्वामी का प्रस्थान। कमांडर का प्रवेश।]

कमांडर : सौरी सर, दक्षिण से करोड़ों मुर्गियाँ दिल्ली पहुँचना ही चाहती हैं। आप आर्डर दें तो हम उन पर बम बरसा सकते हैं।

प्रधानमंत्री : क्या बात करते हो। सारी दुनिया हमारी हँसी उड़ायेगी। हम संसद से क्या कहेंगे।

[कमांडर का प्रस्थान। पुलिस कमिश्नर का प्रवेश।]

कमिश्नर : सर, क्या आदेश है?

प्रधानमंत्री : मैं मुर्गी रानी से बात करना चाहता हूँ।

कमिश्नर : सर, यह काम बहुत मुश्किल है। मुर्गी रानी अंडरग्राउंड हैं।

प्रधानमंत्री : आपने उसे अरेस्ट क्यों नहीं किया?

कमिश्नर : सर, लाखों-करोड़ों मुर्गियों के बीच मुर्गी रानी को पहचानना असंभव है।

प्रधानमंत्री : नो, आप मुर्गी रानी से संपर्क कीजिए। रेडियो पर एनाउंस कराइए। डुग्गी बजवाइये।

[कमिश्नर और प्रधानमंत्री का प्रस्थान। डुग्गीवालों का प्रवेश।]

डुग्गी-1 : सुनो-सुनो, मुर्गी रानी को सूचना दी जाती है कि सरकार के प्रतिनिधि मुर्गी रानी से बातचीत करने के लिए तैयार हैं।

डुग्गी-2 : सुनो-सुनो, मुर्गी रानी को सूचित किया जाता है कि वे अपने दल के साथ चार बजे शाम को गृह मंत्रालय में उपस्थित हों।

[डुग्गी वालों का प्रस्थान। प्रधानमंत्री और पुलिस कमिश्नर का प्रवेश। मुर्गियों के साथ मुर्गी रानी का प्रवेश।]

प्रधानमंत्री : हैलो मुर्गी रानी, वेलकम।

मुर्गी रानी : थैंक यू, सर।

प्रधानमंत्री : मुर्गी रानी, तुम्हारी मुख्य माँगें क्या हैं ?

मुर्गी रानी : हमारी तीन माँगें हैं। नम्बर एक—मुर्गा राजा को तत्काल बिना शर्त रिहा किया जाय।

प्रधानमंत्री : ठीक है। मैंने इसका आदेश दे दिया है।

मुर्गी रानी : देश में हवाला-घोटाला के सभी अभियुक्तों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाय।

प्रधानमंत्री : मुर्गी रानी, भ्रष्टाचार के बारे में सुप्रीम कोर्ट का जो भी फैसला है, उसे हम कड़ाई से लागू करेंगे।

मुर्गी रानी : हमारी तीसरी माँग है कि मानव अधिकार आयोग की तरह पशु अधिकार आयोग भी बनाया जाय।

प्रधानमंत्री : मुझे यह प्रस्ताव भी मंजूर है। मैं इसे संसद से पास करा लूँगा। और कुछ।

मुर्गी रानी : नहीं, इतना ही काफी है।

[प्रधानमंत्री और पुलिस कमिश्नर का प्रस्थान। मुर्गा राजा एवं अन्य मुर्गियों का प्रवेश।]

सभी मुर्गियाँ : मुर्गा राजा जिन्दाबाद! जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!

एक मुर्गी : मुर्गा राजा, इस रैली से हमें क्या मिला ?

मुर्गा राजा : सबसे बड़ी चीज—हमें आत्मसम्मान मिला है।

दूसरी मुर्गी : मुर्गा राजा, हमारा दूसरा कार्यक्रम क्या होगा ?

मुर्गा राजा : इस देश की सांस्कृतिक गंगा बहुत दूषित हो गई है। हमें इस प्रदूषण को दूर करना है।

पहली मुर्गी : मुर्गा राजा, हम इसे कर पायेंगे ?

मुर्गा राजा : जरूर करेंगे। मुर्गियाँ जग गई हैं। सुनें सब लोग! आज हम एक नयी लड़ाई शुरू कर रहे हैं हवाला के खिलाफ।

पहली मुर्गी : घोटाला के खिलाफ।

दूसरी मुर्गी : भ्रष्टाचार के खिलाफ।

तीसरी मुर्गी : अनाचार के खिलाफ।

चौथी मुर्गी : दुराचार के खिलाफ।

पहली मुर्गी : कदाचार के खिलाफ।

मुर्गा राजा : हम एक महासमर की शुरुआत कर रहे हैं। हम आज युद्ध का शंखनाद कर रहे हैं।

[शेर राजा, हाथी राजा, मगर राजा एवं सांड राजा का प्रवेश।]

(सामूहिक गीत)

हम धरती के वरद पुत्र हैं,
माँग रहे अपना अधिकार।
हमको पूरा जीवन दे दो,
हमको दे दो पूरा प्यार।
हम धरती···
सुबह हुई तो भोर जगाते,
शाम को मंदिर दीप जलाते,
बहुत बड़ा परिवार हमारा,
बहुत बड़ा अपना संसार।
हम धरती···

[प्रकाश बुझता है।]

बुधुआ की शादी

(आरा के बाल कलाकारों द्वारा मंचित)

पात्र

शंकर बाबू	:	मालिक (उम्र 50 वर्ष)
बुधुआ	:	घरेलू नौकर (उम्र 24 वर्ष)
लछमिनिया	:	गाँव की लड़की (उम्र 20 वर्ष)

[स्थान : शंकर बाबू की बैठक। समय : सुबह 10 बजे। शंकर बाबू कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ रहे हैं। बुधुआ का प्रवेश। बुधुआ हिचकिचाते-शरमाते हुए मालिक के पास जाता है।]

बुधुआ : मालिक! ए मालिक!

[शंकर बाबू ध्यान नहीं देते।]

बुधुआ : मालिक, सुनतानी।

[शंकर बाबू अखबार से ध्यान हटाते हैं।]

शंकर : अरे बुधुआ, क्या है?

बुधुआ : मालिक, एगो बात कहीं?

शंकर : हाँ-हाँ, बोलो क्या है!

बुधुआ : मालिक, एगो चीज चाही।

शंकर : कौन चीज?

बुधुआ : मंगल पर देब ना।

शंकर : अजब पागल है। पहले बोल क्या चाहिए।

बुधुआ : मालिक, एगो अठन्नी दिही न!

शंकर : अठन्नी, क्या करेगा?

बुधुआ : एगो अठन्नी दिही न!

शंकर : पर अठन्नी, करेगा क्या!

बुधुआ : मालिक! मालिक! (**शरमाता है।**)

शंकर : हाँ-हाँ, बोल न!

बुधुआ : मालिक, बियाह करब।

शंकर : अरे बुधुआ, तू शादी करेगा?

बुधुआ : मालिक, अठन्नी दिही न!

शंकर : अरे बेवकूफ, कहीं अठन्नी में शादी होती है?

बुधुआ : अठन्नी दिही न!

शंकर : अरे पागल, अठन्नी में शादी नहीं हो सकती।

बुधुआ : दिही न! दिही न!

[बुधुआ रोने लगता है।]

शंकर : अच्छा लो, मैं तुझे एक रुपया देता हूँ।

बुधुआ : ना रुपया ना। अठन्नी दिही।

शंकर : अजब पागल है। अठन्नी में शादी करेगा। पर शादी किससे कर रहा है?

बुधुआ : एगो लड़की से।

शंकर : पर तूने लड़की को देखा है?

बुधुआ : हाँ, देखले बानी।

शंकर : अरे वाह! कैसी लड़की है?

बुधुआ : खूब नीमन।

शंकर : गुड! पर बुधुआ लड़की ने भी तुझको देखा है?

बुधुआ : हाँ-हाँ, ऊ भी देखले बिआ।

शंकर : बुधुआ, तुझको लड़की पसन्द है।

बुधुआ : (**शरमाते हुए**) हाँ, मालिक।

शंकर : बुधुआ, लड़की ने तुमको पसंद किया है।

बुधुआ : मालिक, ऊ फोटू भेजल बिआ।

शंकर : माई गौड, लड़की ने तेरे पास फोटो भेजा है।

बुधुआ : हाँ, मालिक।

शंकर : जरा लड़की की फोटो देखें।

[बुधुआ शरमाते हुए कमीज के भीतर से फोटो निकालता है।]

शंकर : अरे यह तो फिल्म एक्ट्रेस श्रीदेवी की फोटो है। बुधुआ, तू श्रीदेवी से शादी करेगा?

बुधुआ : हाँ, मालिक।

शंकर : बुधुआ, यह शादी नहीं हो सकती।

बुधुआ : होई-होई, जरूर होई।

शंकर : बुधुआ, तू तो पागल है।

बुधुआ : एगो अठन्नी दिही न!

शंकर : अच्छा बुधुआ शादी में दहेज क्या मिलेगा?

बुधुआ : ना, हम तिलक ना लेब।

शंकर : अरे बुधुआ, तेरी शादी बिना तिलक-दहेज के होगी।

बुधुआ : ना, हम तिलक ना लेब, ना लेब! **(रोने लगता है)**

शंकर : अच्छा ठीक है। बुधुआ, तू हम को लड़की दिखायेगा।

बुधुआ : ना⋯ना, हम तोहरा के कनिया ना देखाइब।

शंकर : ठीक है। विश यू द बेस्ट आफ लक!

[शंकर बुधुआ को अठन्नी देता है।]

बुधुआ : सलाम मालिक!

(बाहर से आवाज) बुधुआ! ए बुधुआ!

बुधुआ : अरे बाप रे! ई त लछमिनिया आ गइल।

शंकर : बुधुआ, तुमको कौन पुकार रहा है।

बुधुआ : लछमिनिया हिआ गाँव में बकरी चरावेली।

[बुधुआ, बुधुआ, पुकारते हुए लछिमिनिया का प्रवेश।]

लछमिनिया : अरे बुधुआ तू इहाँ लुकाइल बाड़े। चल कालीवाड़ी में पंडित जी बइठल बाड़े।

बुधुआ : हवन के सामान आ गइल?

लछमिनिया : हाँ, हम जंगल से लकड़ी ली आइल बानी। सकील बा। पंडित जो बियाह करावे के अठन्नी लिहें।

बुधुआ : देख लछमिनिया, हम तोहरा से बियाह ना करब।

लछमिनिया : बियाह ना करबे! ई तू का कहत बाड़े।

बुधुआ : हाँ, हम तोहरा से बियाह ना करब।

लछमिनिया : तोहार दिमाग फिर गइल वा। तोहरे कहले पर हम हवन के समान लेअउली। पंडित जी के बोलवली।

बुधुआ : हम दूसर लड़की से बियाह करब।

लछमिनिया : दूसर लड़की से बियाह करबे! के बा ऊ मुँहझौंसी। काली माई ओह के नास़ कर दीहें।

शंकर : बुधुआ सिनेमा की लड़की से शादी कर रहा है।

लछमिनिया : सनीमा के लड़की। ई हम का सुनतानी! ओकर नाम का ह?

शंकर : उसका नाम है श्री देवी।

लछमिनिया : सीरी देवी। करे बुधुआ तू त हमके सीरी देवी कहले रहले।

बुधुआ : ऊ सब भूल जा।

लछमिनिया : भूल जाई! जब हम आम के टिकोरा बीनत रहीं त तू कहले रहले कि लछमिनिया हम तोहार नया नाम रखतानी—सीरी देवी।

बुधुआ : हाँ तब कहले रहली।

लछमिनिया : याद कर, तू कहले रहले कि लछमिनिया हम तोहरा से बियाह करब। बोल!

बुधुआ : ऊ सब बचपन के खेल रहल।

लछमिनिया : तू कहले रहले कि हम लोग नदी किनारे एक झोपड़ी बनाइब। एगो गाय रखब।

बुधुआ : ऊ सब भूल जा।

लछमिनिया : भुल जाईं। का कहत बाड़े। एक बात बोल। जब हम सीरी देवी बानी त ई दूसर सीरी देवी कहाँ से आइल।

बुधुआ : ऊ असली सीरी देवी ह।

लछमिनिया : ना-ना, असली सीरी देवी हमही बानी।

बुधुआ : ना लछमिनिया, हम तोसे बियाह ना करब।

लछमिनिया : देख बुधुआ, जे तु वादा कइले रहे पूरा करे के होई।

बुधुआ : लछमिनिया, तू जो।

लछमिनिया : हम ऐसे ना जाइब। तोहरा के ले के जाइब।

बुधुआ : ई का कहत बाड़े।

लछमिनिया : देख बुधुआ, हम सहर के सुकुआर छोकरी ना हई। हम गाँव के माटी में पलल बानी।

बुधुआ : तब का करबे।

लछमिनिया : देख बुधुआ, हम जंगल से हवन के लकड़ी लाइल बानी। हम हवन के सामान कीनली। पंडित जी के बियाह के खातिर तइयार कइली।

बुधुआ : ना, हम ना जाब।

लछमिनिया : ना जइबे। तोहरा के चले के पड़ी।

[लछमिनिया जंगल की लकड़ी के गट्ठर से एक लकड़ी निकालती है। वह बुधुआ को लकड़ी से प्रहार करती है। बुधुआ शंकर बाबू के चारों तरफ चक्कर काटता है। अंत में गिर जाता है। लछमिनिया बुधुआ की पीठ पर चढ़कर बैठ जाती है।]

लछमिनिया : बोल, चलबे कि ना!

बुधुआ : चलब। चलतानी!

लछमिनिया : तब चलके मालिक के गोड़ थाम।

[बुधुआ और लछमिनिया शंकर बाबू के पैर छूते हैं।]

शंकर : जा बुधुआ, तेरी शादी असली श्री देवी से हो रही है।

[सब हँसते हैं।]

[प्रकाश बुझता है।]

बरगद का शाप

पात्र

बरगद का पेड़
चार तोते—तोता, तोती, तोता शिशु–1, तोता शिशु–2
चार मैना—मैना, मैनी, मैना शिशु–1, मैना शिशु–2
चार शेर—शेर, शेरनी, शेर शिशु–1, शेर शिशु–2
चार शूकर—शूकर, शूकरी, शूकर शिशु–1, शूकर शिशु–2
चार लकड़हारे—सरदार एवं लकड़हारे 1, 2, 3
लोमड़ राजा एवं लोमड़ रानी

1

[सेट—मंच पर एक बरगद का पेड़। तोता परिवार, मैना परिवार, शेर परिवार एवं शूकर परिवार बरगद के पेड़ की पूजा करते हैं।]

(सामूहिक गीत)

ओम जय बरगद देवा—हो देवा!
तुम माता, तुम पिता हमारे
प्यारे का दें मेवा।
ओम् जय बरगद···

तेरी छाया में हम जीते
नभ से झरता, अमृत पीते,
मीठे फल का कलेवा।
ओम् जय बरगद···

पवन चले तो बजता सरगम,
सावन में बूँदों की रिमझिम,
गीतों का खेवा।
ओम् जय बरगद देवा···

बहुत बड़ा परिवार हमारा,
एक का प्यारा, सबका प्यारा,
जन-जन की सेवा।
ओम् जय बरगद···

कोई न ऊँचा, कोई न नीचा,
हरा-भरा रंगीन बगीचा,
गंग-जमुन-रेवा।
ओम् जय बरगद देवा!

[तोता परिवार को छोड़कर अन्य सभी पशुओं का प्रस्थान।]

तोता : सुनो, सुनो, सुनो! आज हमारे पिता बरगद देवता का जन्मदिन है। इस अवसर पर संध्या समय एक सभा होगी।

तोती : सुनो, सुनो, सुनो! इस सभा में जंगल के सभी जानवर आमंत्रित हैं।

तोता शिशु-1 : बाबा, हमारी आयु बहुत कम है। हम बरगद देवता के बारे में कुछ नहीं जानते। हमें बर देवता के बारे में बताइये।

तोता शिशु-2 : हाँ बाबा, बरगद देवता का जन्म कब हुआ? उनकी उम्र क्या है?

तोता : बच्चो, बरगद देवता का जन्म कई सौ साल पहले हुआ था। सुना है कि हमारे पूर्वज तोता राजा दक्षिण से एक बीज लाये थे। उसी बीज से बरगद देवता का जन्म हुआ।

तोता शिशु-1 : बाबा, हम अपने पूर्वज तोता राजा के बारे में भी कुछ नहीं जानते।

तोता : लोगों का कहना है कि एक समय दक्षिण में भयानक अकाल पड़ा था। उसी साल तोता राजा यहाँ आये। वे अपने साथ बरगद का बीज लाये थे।

[तोता परिवार का प्रस्थान। मैना परिवार का प्रवेश।]

मैना : जानते हो बच्चो बरगद देवता के जन्म के समय हमारे पूर्वज मैना राजा ने हजारों गीत गाये थे।

मैनी : हाँ बच्चों, जब हवा चलती है तो बरगद के पत्तों से वे गीत आज भी सुनाई पड़ते हैं।

[मैना परिवार का प्रस्थान। शेर परिवार का प्रवेश।]

शेर : बच्चो, आज बर देवता का जन्म दिवस है। बर देवता के

जन्म के अवसर पर हमारे पूर्वज शेर राजा ने दसों दिशाओं में जयघोष किया था।

शेर शिशु-1 : बाबा, जयघोष क्या होता है?

शेर : पहले यह भूमि ऊसर थी। कहीं कोई पेड़ न था।

शेर शिशु-1 : बाबा, तब क्या हुआ?

शेर : अचानक देवताओं ने हमें एक हरा पेड़ दिया। धीरे-धीरे जंगल बन गया।

शेरिनी : हमारे पूर्वज शेर राजा ने ऐसी गर्जना की थी जैसे एक हजार शंख बज रहे हों।

[शेर परिवार का प्रस्थान। शूकर परिवार का प्रवेश।]

शूकर शिशु-1 : बाबा, आज बरगद देवता का जन्मदिन है। हमें क्या करना चाहिए?

शूकर पुरुष : बच्चो, बर देवता के जन्म के समय यह भूमि कंकर-पत्थरों से भरी हुई थी। हमने इस जमीन पर लोट-पोट कर इसे मखमल-सा नरम बनाया।

शूकर शिशु-2 : बाबा, शहर के बुद्धिजीवी हमसे बहुत नफरत करते हैं।

शूकरी : पर उन्हें हमारा मांस खाने में कोई एतराज नहीं है।

शूकर शिशु-1 : हमें कीचड़ में लोटते देखकर लोग हमसे घृणा करते हैं। बाबा, हमें भी लक्स साबुन से नहाना चाहिए।

शूकर : चुप रहो। हम धरती के पुत्र हैं। और सुनो, कीचड़ में ही कमल होता है।

[शूकर परिवार का प्रस्थान।]

2

[दृश्य : सेट से बाहर एक जंगली मार्ग। समय : उसी दिन, सुबह। विपरीत दिशाओं में लोमड़ राजा और लोमड़ रानी का प्रवेश।]

लोमड़ रानी : आओ, आओ लोमड़ राजा,
इतना चुप क्यों मुँह का बाजा।

लोमड़ राजा : आओ, आओ लोमड़ रानी,
वन की रानी, बड़ी सयानी।

लोमड़ रानी : बरगद तरु का जन्मोत्सव है,
सुना बहुत बड़ा उत्सव है।

शेर मनेजर, सचिव है तोता,
पूरे जंगल बजता भोपा।

मुर्गा मछली फलाहार है,
लंच डिनर फाइव-स्टार है।

लोमड़ राजा : बहुत सरल हो लोमड़ रानी
जान-बूझ करती नादानी,

शेर, हिरन, भेड़ और तीतर,
तोता, मैना, गदहा-शूकर।

कहीं मिल गये सारे लोगा,
हाय राम अपना क्या होगा।

आज डिनर, कल होगा सूखा,
मरेगा कुनबा, भूखा-भूखा।

लोमड़ी रानी : हाय राम यह क्या कहते हो,
सब दिन का दुख क्यों सहते हो।

सब भाई हैं—झूठा नारा,
राजनीति का खेल है सारा।

छैला बाबू, बात को मोड़ो,
नया-नया कुछ तिकड़म जोड़ो।

लोमड़ राजा : लोग मुझे कहते हैं सयाना,
मेरी प्रतिभा किसने जाना।

शेर मूर्ख है, सूअर-सूअर,
तोते की पालिटिक्स है फूहर।

भाई-भाई होंगे गारत
देखो सब, नयका महाभारत।

देखो सब नयका महाभारत।

[लोमड़ राजा लोमड़ रानी का प्रस्थान।]

3

[सेट : बरगद का पेड़। 'बर देवता की जय' बोलते तोता, मैना, शेर एवं शूकर के परिवार, लोमड़ राजा और लोमड़ रानी का प्रवेश।]

सब : लोमड़ राजा की जय! लोमड़ रानी की जय!

तोता : भाइयो, आज बरगद देवता का जन्मदिन है। हम सभी पशु-पक्षियों का स्वागत करते हैं। हम लोमड़ राजा और लोमड़ रानी का विशेष रूप से स्वागत करते हैं। हमने महाभारत नहीं पढ़ा है। लोग लोमड़ राजा को शकुनी मामा कहते हैं। हम लोमड़ राजा का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित करते हैं।

मैना : मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

तोती : भाइयो, मैं मुख्य अतिथि के पद के लिए लोमड़ रानी का नाम प्रस्तावित करती हूँ। हमने रामायण नहीं पढ़ा है। पर लोग लोमड़ रानी को मंथरा-मौसी कहते हैं।

सब : हम सब इसका समर्थन करते हैं।

[सब ताली बजाते हैं।]

सब : शकुनी मामा की जय, मंथरा मौसी की जय।

तोता : अब शकुनी मामा का भाषण होगा।

लोमड़ राजा : भाइयो, आप लोगों ने हमारा सम्मान किया—वाह, वाह! आपने हमें शकुनी मामा कहा—वाह-वाह! मैंने भी महाभारत नहीं पढ़ा है। पर महाभारत बहुत अच्छी चीज है। घर-घर में महाभारत होना चाहिए। आपका आपसी परेम देख बहुत खुशी हुई। वाह-वाह! सुना है कि सरकार आपको पुरस्कार देने वाली है। सवाल है कि पुरस्कार किसको दिया जाय। तोता राजा तो चुपके-चुपके पैरवी कर रहे हैं।

तोता : पैरवी की बात झूठ है।

लोमड़ राजा : भइया, राजनीति में सच और झूठ दोनों चलता है।

तोता : जो भी हो, यह झूठा आक्षेप है।

लोमड़ राजा : अरे भइया, काहे एतना गरमाते हो। मैंने तो वही कहा है जो अखबार में छप चुका है।

शेर : जंगल में कोई अखबार नहीं पढ़ता। अखबार में सिर्फ अपहरण और बलात्कार की खबरें होती हैं।

तोता : शेर राजा ठीक कहते हैं।

लोमड़ राजा : चलो भाई तुम ही ठीक हो। हाँ, एक बेहद खतरनाक खबर है।

तोता : ऐसी कौन-सी खबर है?

लोमड़ राजा : कल रात हमने एक बहुत भयानक सपना देखा है। सपने को याद कर हम सुबह से ही रो रहे हैं।

लोमड़ रानी : हे भगवान, इन बच्चों की रक्षा करो।

लोमड़ राजा : मैंने भगवान से कह दिया—भगवान् मेरी जान ले लो पर जंगल के भाइयों की रक्षा करो।

[रोने का अभिनय करता है।]

शेर : ऐसी क्या बात है। साफ-साफ कहें।

लोमड़ राजा : मैंने सपना देखा कि भयानक भूकम्प आने वाला है। बड़े-बड़े पहाड़ खिलौने की तरह टूट कर गिरेंगे। बड़े-बड़े पेड़ खत्म हो जायेंगे।

तोता : यह तो बुरी खबर है।

लोमड़ राजा : सबसे ज्यादा नुकसान बरगद के पेड़ का होगा।

शेर : इसका क्या कारण है ?

लोमड़ राजा : तुम लोगों ने बरगद को देवता ही बना दिया है। शनि देवता इस बात से बहुत नाराज हैं।

तोता : हम तो प्रकृति की पूजा कर रहे हैं।

लोमड़ राजा : नहीं, यह बिल्कुल गलत है।

शेर : आप क्या कहना चाहते हैं।

लोमड़ राजा : बरगद का विनाश निश्चित है।

तोता : बर देवता हमारे पिता हैं। उनके विनाश से हम बरबाद हो जायेंगे।

लोमड़ राजा : मैं शनि देवता से बात करूँगा। तुम लोग कल मुझसे मिलो। पर एक साथ नहीं—अलग-अलग आना।

शेर : ठीक है। हम आपके सुझाव पर अमल करेंगे।

तोता : अब लोमड़ रानी का भाषण होगा।

लोमड़ रानी : भइया लोग—आप लोगों पर मुसीबत आई है। पर घबराइये मत। लोमड़ रानी आपके साथ है। मैं झाड़ू से सबको बुहार दूँगी। आपने मुझे मंथरा मौसी कहा है। मंथरा जंगल की बेटी थी। मैं जंगल को उजड़ने नहीं दूँगी। सबको झाड़ू से बुहार दूँगी।

सब : लोमड़ राजा की जय! लोमड़ रानी की जय!

4

[दृश्य : बरगद का पेड़। लोमड़ राजा और लोमड़ रानी पूजा कर रहे हैं।]

दोनों : जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।

[तोता और तोती का प्रवेश।]

तोता : अरे शकुनी मामा पूजा कर रहे हैं।

तोती : वे जरूर हमारे लिए प्रार्थना कर रहे होंगे।

लोमड़ राजा : आओ तोता राजा, तोता रानी।

तोता : हमारे लिए क्या संदेश है ?

लोमड़ राजा : शनि देवता बहुत नाराज हैं। बरगद को काटना ही होगा।

तोता : बरगद की मौत हम सभी की मौत होगी।

लोमड़ रानी : देखो भइया, सब कुछ अपनी इच्छा से नहीं होता।

लोमड़ राजा : हाँ भइया, जब सर्वनाश उपस्थित हो तो सयाना पुरुष आधा बचा लेता है।

तोता : वह आधा क्या है।

लोमड़ राजा : बरगद में कितनी डालियाँ हैं ?

तोता : चार-एक डाली मेरी है, एक मैना की। तीसरी शेर भैया की है। चौथी डाली शूकर भैया की है।

लोमड़ राजा : ठीक है। तीसरी और चौथी डाल को कट जाने दो।

तोता : यह उचित नहीं होगा।

लोमड़ राजा : तब पहली और दूसरी डाल को कट जाने दो।

तोता : मगर हमारे बच्चों का क्या होगा।

लोमड़ राजा : तुम्हारे बच्चों का वैसे भी कोई भविष्य नहीं है। शेर राजा का कहना है कि तोता-मैना को बरगद से हटा दिया जाय। ये लोग बहुत शोर मचाते हैं। बदन पर बीट कर देते हैं।

तोती : सुन लिया तुमने! दिन-रात शेर भैया-शेर भैया करते हो।

तोता : मुझे विश्वास नहीं है।

लोमड़ राजा : सुनो, तुम्हारे बच्चे भी बरगद की व्यवस्था से खुश नहीं हैं। वे शेर और शूकर को हटाना चाहते हैं। वे शेर की गर्जना से डरते हैं। वे शूकर की गोंगों से नफरत करते हैं।

तोती : सुन लिया न तुमने! अब और कुछ बाकी रह गया है।

तोता : मैं सोच कर कहूँगा।

लोमड़ राजा : मैंने शनि देवता से आधा पेड़ काटने की बात कही है। अगर यह न हुआ तो पूरे पेड़ का विनाश हो जायेगा।

[तोता और तोती का प्रस्थान। मैना और मैनी का प्रवेश।]

लोमड़ राजा : मैना राजा तुम पेड़ की किस डाल पर रहते हो!

मैना : तोता पूरबी डाल पर है, मैं पच्छिमी। शेर और शूकर उत्तर और दक्षिण की डाल का उपयोग करते हैं।

लोमड़ राजा : शनि देवता का आदेश है कि पेड़ की दो डालियाँ काट दी जाएँ। पेड़ से शेर और शूकर को निकाल दिया जाय।

मैना : यह सब किसने तय किया है?

लोमड़ राजा : यह शनि देवता का निर्णय है। तोता राजा ने इसे स्वीकार कर लिया है।

मैना : लेकिन शेर भैया और शूकर भैया ने क्या कहा है?

लोमड़ राजा : उसकी बात छोड़ दो। वे तो तोता-मैना को निकालना चाहते हैं।

मैनी : तुमने कुछ सुना। जिनको तुम गार्जियन कहते हो उनका यह हाल है।

लोमड़ राजा : किसी के कहने से क्या होता है। शेर और शूकर को पेड़ की क्या जरूरत है।

मैना : शेर भैया को हमसे क्या शिकायत है?

लोमड़ राजा : तुम बहुत शोर मचाते हो। उनके सिर पर बीट करते हो।

मैनी : सुन लिया न! या कुछ और सुनना है। लोमड़ राजा, आपने ठीक सोचा है। आप शेर और शूकर को पेड़ से हटा

दीजिए।

[मैना और मैनी का प्रस्थान। शेर और शेरनी का प्रवेश।]

लोमड़ राजा : आइये शेर राजा!

शेर : कहिये लोमड़ राजा, क्या खबर है?

लोमड़ राजा : शनि देवता ने फैसला दे दिया है। बरगद की दो डालियाँ काटनी होंगी।

शेर : पर हम बरगद को अपना देवता मानते हैं।

लोमड़ राजा : दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

शेर : भूकम्प से हमें क्या डर है। हमने कितने ही भूकम्प देखे हैं।

लोमड़ राजा : भूकम्प से आपको डर नहीं है। पर तोता-मैना का पूरा खानदान धरती में समा जायेगा।

शेर : राम-राम, यह तो बहुत बुरा होगा। आपका क्या सुझाव है।

लोमड़ राजा : तोता-मैना का कहना है कि शेर और शूकर की डालियाँ काट दी जाएँ।

शेरनी : सुना तुमने, जिनको तुमने बच्चों की तरह पाला है, वे हमको निकालने की बात करते हैं।

शेर : मुझे कोई एतराज नहीं है।

तोता : मैना के लिए पेड़ जरूरी है। हम उनकी डालियों के नीचे रह लेंगे।

शेरनी : यह तो खूब रही। वे हमारे सिर पर टाँय-टाँय करें और बीट करते रहें।

शेर : लोमड़ राजा, ये सब छोटी-छोटी बातें हैं। हमें कोई एतराज नहीं है।

लोमड़ राजा : एक बात और है। शनि देवता आप से बहुत नाराज हैं।

शेर : ऐसी क्या बात है?

लोमड़ राजा : उनका कहना है कि शेर को शेर की नरह रहना चाहिए।

शेर और चिड़िया की दोस्ती ठीक नहीं है।

शेरनी : लोमड़ राजा ठीक कहते हैं। तुम अब तोते की तरह बोलने लगे हो।

लोमड़ राजा : यह सब शनि देवता ने कहा है।

शेर : ठीक है। मैं सोच कर कहूँगा।

शेरनी : सोचना क्या है। पेड़ से तोता-मैना को निकलवा दीजिए। कम्बख्त दिन-रात बीट करते रहते हैं।

[शेर एवं शेरनी का प्रस्थान। शूकर और शूकरी का प्रवेश।]

लोमड़ राजा : आओ शूकर राजा। धरती हिलने वाली है।

शूकर : धरती हिलती है तो हिलने दो। शूकर भगवान् फिर धरती को बचा लेंगे।

लोमड़ राजा : तुम तो कुंभकरण की तरह सोये रहते हो। मालूम है, तुम्हारे खिलाफ साजिश हो रही है।

शूकर : मैं तो गरीब मजदूर हूँ। कोई मेरा क्या बिगाड़ सकता है।

लोमड़ राजा : तोता तुम्हारे खिलाफ है। मैना उसका साथ दे रहा है। वे शेर को मिलाने की कोशिश कर रहे हैं।

शूकरी : इनको कुछ समझ में नहीं आता। ये तो बाबा भोलेनाथ हैं।

शूकर : इन सब बातों का क्या सबूत है ?

लोमड़ राजा : तोता तुम्हारी बराबर शिकायत करता है। कहता है कि शूकर ने जमीन खोद दिया है। पेड़ गिरने का खतरा है।

शूकरी : सुन लिया न! तोता के लिए शकरकंद खोद कर लाते थे। आज वह तुम्हारी जड़ खोद रहा है।

शूकर : मुझे सोचने दो।

शूकरी : अब सोचना क्या है। लोमड़ राजा, आप ठीक सोचते हैं। तोता-मैना को पेड़ से निकलवा दीजिए। इडियट, दिन-रात टाँय-टाँय करते रहते हैं।

[सब का प्रस्थान।]

5

[विपरीत दिशाओं से लोमड़ राजा और लोमड़ रानी का प्रवेश।]

लोमड़ रानी : शकुनी मामा, किया कमाल,
कैसा अब चेलों का हाल।

लोमड़ राजा : कटेगा बरगद, लड़ेंगे भाई,
सुन अपने बचवा की माई।

लोमड़ रानी : शेर है मूरख, तोता पोंगा,
सुलह कर लिया तब क्या होगा।

लोमड़ राजा : भीतर–बाहर चिनगारी है,
वह कैंसर की बीमारी है।

लकड़हारे आते ही होंगे,
बड़े कुल्हाड़े लाते होंगे।

घर के बीच उठ गयी मेड़,
जल्द कटेगा बरगद पेड़।

लोमड़ रानी : करो पालिटिक्स, शकुनी मामा,
बिना दाम का चलता ड्रामा।

लोमड़ राजा : देखो खेल, मंथरा मौसी,
चलता शकुनी, चल मुँह झौंसी।

[दोनों का प्रस्थान।]

6

[स्थान : बरगद का पेड़। तोता और तोती का प्रवेश।]

तोता : सुनो, मैंने एक सपना देखा है। बरदेवता ने कहा कि उन्हें

काटने शहर के लकड़हारे आ रहे हैं। वे यहाँ शराब की भट्ठी लगायेंगे। हम लोगों को विरोध करना चाहिए।

तोती : यह असंभव है। बरगद के बेटे आपस में लड़ रहे हैं। वे खुद पेड़ कटवाना चाहते हैं।

तोता : इस बिखराव को रोकना होगा।

तोती : अरे चुप भी रहो। लोमड़ राजा की योजना को चलने दो।

[तोता और तोती का प्रस्थान। मैना और मैनी का प्रवेश।]

मैना : तोता कहता है कि शहर से लकड़हारे आ रहे हैं। वे बरगद को काटेंगे। फिर शराब की भट्ठी लगायेंगे।

मैनी : जैसे चलता है, चलने दो। शेर और शूकर से छुट्टी मिल जायेगी।

[मैना और मैनी का प्रस्थान। शेर एवं शेरनी का प्रवेश।]

शेर : सुना है, बरगद को काटने वाले शहर से आ रहे हैं। यहाँ शराब की भट्ठी लगेगी।

शेरनी : कटने दो पेड़। लगने दो भट्ठी! हम भी एक चुल्लू पी लेंगे।

शेर : क्या बकती हो।

शेरनी : मुझे मालूम है। पेड़ नहीं पेड़ का हिस्सा कटेगा। तोता और मैना को हटाया जायेगा।

[शेर और शेरनी का प्रस्थान। शूकर और शूकरी का प्रवेश।]

शूकर : पता नहीं क्या हो रहा है। हमें कोई कुछ नहीं बताता।

शूकरी : बरगद के नीचे राजनीति का अखाड़ा खुल गया है। सभी एक-दूसरे के खिलाफ पौलिटिक्स कर रहे हैं।

शूकर : तोता का शासन ठीक ही चल रहा था। लोग बिना वजह दौड़-धूप कर रहे हैं।

[शूकर और शूकरी का प्रस्थान।]

7

[स्थान : वही। समय : थोड़ी देर बाद। कुल्हाड़ा लेकर सरदार और तीन लकड़हारों का प्रवेश।]

सरदार : वाह क्या बात है। बरगद की लकड़ी, बगल में नदी और महुआ का जंगल-लोमड़राजा को धन्यवाद। हम यहाँ शराब की नदी बहा देंगे।

लकड़हारा-1 : दादा, पुलिस हमें परेशान कर सकती है।

सरदार : पुलिस कुछ नहीं करेगी। उसे भी एक चुल्लू पिला देंगे।

लकड़हारा-2 : दादा, यह चीफ मिनिस्टर का चुनाव क्षेत्र है। वह बराबर आते रहते हैं।

सरदार : घबराओ मत। नोटों से भरे एक सूटकेस से काम चल जायेगा।

लकड़हारा-3 : दादा, लोग पर्यावरण की बात करते हैं। मेनका गांधी हैं। टी. एन. सेशन भी हल्ला करते हैं।

सरदार : कोई बात नहीं। सब पर एक-एक केस ठोक देंगे। पंद्रह साल की छुट्टी हो जायगी।

लकड़हारा : अच्छा, दादा ठीक है।

सरदार : चलो, सब लोग काम में लग जाओ।

[लोमड़ राजा का प्रवेश।]

लोमड़ राजा : राज और नरगिस की जोड़ी,
रेस में दौड़ी काली घोड़ी
ताली पीटे बाबू भैया

सब : हो हइया, हो हो हइया।

[सब लकड़हारे कुल्हाड़ा चलाते हैं।]

लोमड़ राजा : मंगरू की माँ ने पीसा आटा
चूहों ने आपस में बाँटा
शोक मनाये बड़की मैया

सब : हो हइया, हो हो हइया।

लोमड़ राजा : बैट उठाये कालू कक्का,
पब्लिक बोली—वाह रे छक्का,
बॉल ले गयी उजली गइया।

सब : हो हइया, हो हो हइया।

लोमड़ राजा : चढ़े ट्रेन पर मिस्टर टुल्ली,
बिना टिकट था जाना दिल्ली
टी. टी. ई. ने माँगा रुपैया।

सब : हो हइया, हो हो हइया।

[पेड़ की सभी डालियाँ कट-कट गिरती हैं। लोमड़ राजा का प्रस्थान।]

सरदार : भइया, पेड़ तो कट गया। महुआ का बरतन लाओ। मैं आग जलाता हूँ।

[सभी लकड़हारे चूल्हा जोड़ते हैं। सरदार आग लगाता है। सब शराब का बरतन चूल्हे पर चढ़ाते हैं।]

सरदार : मजा आ गया। आज हम छक कर पीयेंगे।

[एक लकड़हारा आग फूँकता है। सब कलछुल चलाते हैं।]

सरदार : देखो, तोता-तोती आ रहे हैं।

[तोता-तोती का प्रवेश।]

तोता : अरे बरदेवता कहाँ गये ?

सरदार : देखते नहीं तुम्हारे बरदेवता आग में जल रहे हैं।

तोता : तय हुआ था कि सिर्फ दो डालियाँ कटेंगी।

सरदार : यह सब किसने कहा था। लोमड़ राजा ने तो पूरा पेड़ काटने को कहा था।

तोता : लगता है कि लोमड़ राजा ने सबको धोखा दिया है।

तोती : पेड़ तो कट गया। पर हमारा घोंसला कहाँ है। हमारे बच्चे कहाँ हैं।

सरदार : जब पेड़ कटा तो घोंसला गिरा। तुम्हारे बच्चों का कीमा बन गया।

तोता : अब जीना बेकार है। हम भी आग में कूदेंगे।

[तोता-तोती आग में कूद जाते हैं। मैना-मैनी का प्रवेश।]

मैना : यह क्या, पूरा पेड़ कट गया। हमारा घोंसला कहाँ है। हमारे बच्चे कहाँ हैं।

सरदार : पेड़ गिरा। बच्चा मरा। आग में जला। कीमा बना।

मैना : तब तो हम भी आग में जलेंगे।

मैनी : हाँ, हम भी उसी आग में जान देंगे।

[मैना-मैनी आग में कूद जाते हैं। शेर-शेरनी का प्रवेश।]

शेर : अरे पूरा पेड़ कट गया। लोमड़ राजा ने तो दो डालियों की बात कही थी।

सरदार : लोमड़ राजा ने झूठ बोला था।

शेरनी : पेड़ गया तो गया पर हमारे बच्चे कहाँ हैं?

सरदार : पेड़ गिरा। बच्चा मरा। आग में जला। कबाब बना।

शेर : तब हम भी उसी आग में जलेंगे। अब जीना बेकार है।

[शेर-शेरनी आग में कूद जाते हैं। शूकर-शूकरी का प्रवेश।]

शूकर : हमें पहले ही शक था। सबने मिलकर बरगद की हत्या कर दी।

शूकरी : पर हमारे बच्चे कहाँ हैं। पेड़ के नीचे खेल रहे थे।

सरदार : पेड़ गिरा। बच्चा मरा। आग में जला। बरतन में गला।

शूकर : तब ठीक है। हमें भी आग में जलने दो। बरतन में गलने दो।

[शूकर-शूकरी आग में कूद जाते हैं।]

सरदार : चलो यह झमेला खत्म हो गया। महुआ की शराब और शेर और शूकर का कबाब—मजा ही मजा है।

लकड़हारा : हाँ सरदार ठीक है। बरतन से बड़ी अच्छी सुगंध आ रही है।

आकाशवाणी : बरगद की हत्या करने वालो सुनो! मैं हूँ बरगद की आत्मा।

लकड़हारा-1 : दादा, यह कौन बोल रहा है?

सरदार : होगा कोई! हमें क्या फरक पड़ता है।

आकाशवाणी : तुमने पेड़ काट कर जीवों की हत्या की है। इस पाप की मदिरा में इन जीवों का प्रभाव होगा। शराब पीकर मनुष्य क्रमशः तोता, मैना, शेर और शूकर की तरह व्यवहार करेगा। अंत में सब नष्ट हो जायेंगे।

लकड़हारा-1 : दादा, यह कौन बोल रहा है?

सरदार : होगा कोई। हमें क्या मतलब है। लाओ शराब प्याले में डालो।

[लकड़हारा सबको शराब देता है।]

सरदार : लो यारो पियो। शनि देवता के नाम पर पहला जाम।

[सब शराब की चुस्की लेते हैं।]

लकड़हारा-1 : दादा, अगर मैं देश का प्रधानमंत्री हो ज़ाऊँ तो मैं सब कुछ ठीक कर दूँगा।

लकड़हारा-2 : वाह बेटा, तू प्रधानमंत्री कैसे बनेगा। पहले चुनाव जीतेगा तब न! मैं तुझे चुनाव जीतने ही न दूँगा।

लकड़हारा-1 : दादा, सारे लठैत मेरी मुट्ठी में हैं। मुझको छोड़कर चुनाव कौन जीत सकता है।

सरदार : तुम सब ईडियट हो। मैं हूँ चुनाव आयुक्त। मेरे फरमान के आगे सबकी धोती ढीली हो जाती है। सब घिघियाने लगते हैं। ला बेटा, दूसरा जाम।

[लकड़हारा शराब का दूसरा कप देता है।]

सरदार : शनि देवता के नाम पर व्हिस्की का दूसरा कप।

[सब कप उठाकर चुस्की लेते हैं।]

सरदार : बेटा, मजा आ गया। जानते हो जवानी में मैं खूब गाता था।

लकड़हारा-1 : दादा, आप अब भी जवान हैं।

सरदार : देख बेटा, सिर काट ले पर बात मत काट। महफिल में

रसूलन बाई गा रही थी—अँधेरिया है रात सजन रहियो कि जइहो। मैंने जवाब दिया—अँधेरिया है रात गोरी पायल न बजइयो।

लकड़हारा-1 : वाह दादा, क्या बात है। (**गाता है**) अँधेरिया है रात सजन रहियो कि जइहो। अँधेरिया है रात, गोरी पायल न बजइयो।

लकड़हारा-2 : सोने की थाली में जेवना परोसो।

लकड़हारा-3 : जेवना मजेदार, सजन रहियो कि जइयो।

सरदार : बेटा, गला सूख रहा है। एक प्याला और दे।

[लकड़हारा कप में शराब ढालता है।]

सरदार : चल बेटा, शनि देवता के नाम पर तीसरा जाम।

[सब कप उठाकर चुस्की लेते हैं।]

लकड़हारा-1 : दादा, शराब के मुनाफे को अकेले न हड़प जाना। हम सबको हिस्सा दोगे न ?

सरदार : तू साला हिस्सा माँग रहा है। सब जोगाड़ हमने किया। पुलिस को हमने पटाया—और तू साला हिस्से की बात करता है।

लकड़हारा-1 : दादा, बहुत हो गया। गाली मत दो।

सरदार : दूँगा, हजार बार दूँगा। तुम सब साले मुफ्तखोर हो। तुम्हारा बाप मुफ्तखोर, तुम्हारा दादा जूताचोर, तुम्हारा दादा मंदिर में जूता चुराता था।

लकड़हारा-2 : दादा, बाप-दादा का नाम मत लो।

लकड़हारा-3 : दादा, तुम दूसरों को क्या कहोगे। हमें सब मालूम है। डकैती न करो तो रोजी-रोटी न चले।

सरदार : खबरदार, अब किसी ने मुँह खोला तो इस कुल्हाड़े से टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

[दो लकड़हारे कुल्हाड़ा उठा लेते हैं।]

लकड़हारा : दादा, बात बहुत बढ़ गयी है। अब लाश गिरना बाकी है। छोड़ो यह सब, शराब पियो।

सरदार : (**कुल्हाड़ा रखकर**) ठीक है, पिलाओ। साले आज हम

समुद्र सोख लेंगे।

[लकड़हारा प्याले में शराब डालता है।]

सरदार : लो प्यारे, शनि देवता के नाम पर चौथा जाम।

[सब कप उठाकर पीते हैं।]

लकड़हारा-2 : दादा, जानवरों का कीमा भी है। हम खाली पेट प्याला पर प्याला चढ़ा रहे हैं।

सरदार : हाँ-हाँ, लाओ। नशा पूरा चढ़ गया है। गर्मी लग रही है। जमीन पर लोटना अच्छा लगेगा।

[सभी जमीन पर लोटते हैं। सरदार लोटते -लोटते स्थिर हो जाता है।]

लकड़हारा-1 : दादा, और चाहिए। **(सरदार कुछ नहीं बोलता। लकड़हारा पास जाकर देखता है।)**

लकड़हारा-1 : अरे दादा तो खल्लास हो गया। ठीक हो गया। शराब का मुनाफा अब तीन हिस्से में बँटेगा।

लकड़हारा-2 : भइया एकाध कप और चलेगा?

लकड़हारा-1 : हाँ-हाँ, बड़ी थकान लग रही है।

[लकड़हारा-2 शराब लाता है।]

लकड़हारा-1 : मुर्दा-सा पड़ा है।

लकड़हारा-2 : अरे भइया भी खल्लास हो गया। अब मुनाफा दो भाग में बँटेगा।

लकड़हारा-3 : इसी खुशी में हो जाय एक और जाम।

[दोनों लकड़हारे शराब पीते हैं। वे पीकर अजीब-सी हरकतें करते हैं।]

लकड़हारा-2 : पता नहीं, क्यों सिर घूम रहा है।

लकड़हारा-3 : सो जाओ। मुझे भी नींद आ रही है।

[दोनों तड़पते हुए मर जाते हैं। लोमड़ राजा और लोमड़ रानी का प्रवेश।]

लोमड़ राजा : अरे, लगता है कि सब मर गये। तोता, मैना, शेर, शूकर और चार-चार आदमियों का मीट। यह तो एक महीने

का राशन है।

लोमड़ रानी : लोग पूछते हैं, अकल बड़ी या भैंस। शकुनी मामा, तुम्हारी अकल के सामने सब मात खा गये।

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, तुम्हारी सलाह भी कम नहीं थी। अच्छा चर्चा तो चलती ही रहेगी। हमारे सामने तरह-तरह का भोजन है। कहाँ से शुरू किया जाय।

लोमड़ रानी : शकुनी मामा, आदमी का मीट बहुत मुश्किल से मिलता है। लेकिन ठहरो। आदमी लोग खाने के पहले शराब पीते हैं। हमें भी चख कर देखना चाहिए।

लोमड़ राजा : वाह क्या बात है। घड़ा लाओ। हम मुँह लगाकर पीयेंगे।

[दोनों घड़े में मुँह लगाकर पीते हैं।]

लोमड़ रानी : वाह शकुनी मामा, तुमने बहुत अच्छी चीज पिलाई। मजा आ गया।

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, शेर तो मर गया। अब जंगल का राजा कौन बनेगा।

लोमड़ रानी : तुमको छोड़कर कौन बन सकता है। तुम ही बनोगे जंगल के राजा।

लोमड़ राजा : और तुम बनोगी जंगल की रानी।

लोमड़ रानी : शकुनी मामा, एक और घूँट पीने से ठीक रहेगा।

लोमड़ राजा : हाँ-हाँ, ठीक है।

[दोनों घड़े से मुँह लगाकर पीते हैं।]

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, गाने का मन करता है।

लोमड़ रानी : मुझे बच्चों का एक गाना याद है।

लोमड़ राजा : हाँ-हाँ—वह गाना मैं भी जानता हूँ—
मम्मी-मम्मी, गरम चाय।

लोमड़ रानी : चाय है महँगी, डीयर ब्वाय।

लोमड़ राजा : मम्मी-मम्मी, दे दो चाय।

लोमड़ रानी : दूध है महँगा, डीयर ब्वाय।

लोमड़ राजा : मम्मी-मम्मी, वन कप चाय।

लोमड़ रानी : चीनी है महँगी, डीयर ब्वाय।

लोमड़ राजा : चाय न हो तो विस्की-बीयर।

लोमड़ रानी : चाय है रेडी, माई डीयर।

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, एक ड्रिंक और।

लोमड़ रानी : ओ. के. शकुनी मामा।

[दोनों शराब पीते हैं।]

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, रामायण की मंथरा ने दशरथ का घर फोड़ा था। तुम मेरा घर तो नहीं तोड़ दोगी।

लोमड़ रानी : अगर तुमने गड़बड़ किया तो तुम्हारा कान काट लूँगी।

लोमड़ राजा : ऐं तुम राजा पर हुकूमत चलाओगी।

लोमड़ रानी : हाँ, सब कुछ मेरी राय से हुआ है।

लोमड़ राजा : मैं तुम्हारी टाँग तोड़ दूँगा।

लोमड़ रानी : मैं इसी कुल्हाड़ी से तुम्हारी गरदन उड़ा दूंगी।

लोमड़ राजा : कौन हुकूमत करेगा, इसका फैसला बाद में होगा। पहले एक और घूँट।

लोमड़ रानी : येस, शराब के नाम पर सुलह हो सकती है।

[दोनों घड़े से शराब पीते हैं।]

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, थक गया।

लोमड़ रानी : शकुनी मामा, थोड़ा आराम कर लो।

लोमड़ राजा : मंथरा मौसी, इतने लोग क्यों मर गये?

लोमड़ रानी : इस सवाल का जवाब तो मरे लोगों से पूछना होगा।

लोमड़ राजा : लोमड़ रानी, पेट में मरोड़ हो रही है।

लोमड़ रानी : हाँ, मेरे पेट में भी कोई सुई चुभो रहा है। लगता है किसी ने शराब में जहर मिला दिया है।

लोमड़ राजा : ओ माँ, यह तो बरदाश्त के बाहर है। बचाओ-बचाओ, कोई बचाओ।

लोमड़ रानी : हमें अब कोई बचा नहीं सकता। हमें अब कोई बचा नहीं सकता।

[दोनों छटपटाकर मर जाते हैं।]

(आकाशवाणी)

सुनो-सुनो, रावण के पुत्रो सुनो।
तुम जंगल का विनाश किया।
तुमने जानवरों की हत्या की।
इसका पाप तुम्हें भोगना होगा।
एक शाप तुम्हारे सिर पर हमेशा मँडराता रहेगा।
सुनो-सुनो!
सभी लोग सुनो!
जीवन मृत्यु से बड़ा सच है!
जीवन मृत्यु से बड़ा सच है!
जीवन मृत्यु से बड़ा सच है!